दैनिक

पुष्पांजली टुडे

MPHIN/2021/83938

नई सोच नई पहल

ग्वालियरः वर्षः4 : अंकः 20 | ग्वालियर, बुधवार 2 अक्टूबर 2024 | पृष्ठः 8 मूल्यः 2 रुपए

न्यूज ट्रैक

यूपी के सुल्तानपुर में एक और एनकाउंटर, युवती का मर्डर करने वाले 3 बदमाशों को लगी गोली

सुल्तानपुर। उत्तर प्रदेश के सुल्तानपुर जिले में एक और एनकांउटर हुआ है। इस बार आरोपियों की मौत नहीं है बल्कि गोली लगने से घायल हैं। जानकारी के अनुसार, शादी का झांसा देकर युवती के साथ अवैध संबंध बनाने और हत्या करने के आरोपी सलमान और साथी सरवर व जावेद को पुलिस मुठभेड़ में गोली लगी है। तीनों घायल हैं। पुलिस ने आरोपियों को हिरासत में लिया है। यह एनकाउंटर अखंडनगर थाना क्षेत्र में हुआ। अपर पुलिस अधीक्षक अखंड प्रताप सिंह ने बताया कि पिछली 21 सितंबर को गोसाईंगंज क्षेत्र में एक युवती का शव मिला था। पोस्टमार्टम में पता चला कि उसकी मौत दम घुटने के कारण हुई थी। युवती की गुमशुदगी की रिपोर्ट एक जून को कादीपुर थाने में दर्ज कराई गई थी। पुलिस जांच में पता चला कि हत्या में चार लोग सलमान, शहंशाह, सरवर और जावेद शामिल थे। सलमान युवती को पहले से जानता था और उसके साथ मुंबई भी गया था। वहां से वापस लौटने के बाद उसने गोसाईगंज इलाके में सलमान से शादी के बारे में बात की। बात नहीं मानने पर उसे और उसके साथियों को जेल भेजने की धमकी दी। इसके बाद सलमान और उसके साथियों ने उसके खिलाफ साजिश रची और 20 सितंबर को उसकी हत्या कर दी। जांच के दौरान शहंशाह को गिरफ्तार कर लिया गया और मंगलवार की सुबह बाकी तीन अभियुक्तों को गिरफ्तार करने के लिए अखंडनगर इलाके में घेराबंदी की गयी। पुलिस ने दावा किया कि पुलिस टीम ने जब पीछा किया तो आरोपियों ने पुलिसकर्मियों पर गोलियां चलाईं। जवाबी कार्रवाई में तीनों अभियुक्तों को गोली लगी और बाद में उन्हें हिरासत में लेकर इलाज के लिए अस्पताल भेज दिया गया। पुलिस ने बताया कि मामले में आगे की कार्रवाई की जा रही है।

ऐसे ही नहीं मिल जाएगा टिकट, कांग्रेस अब इच्छुक उम्मीदवारों का सबसे पहले लेगी इंटरव्यू

महाराष्ट्र में इसी साल चुनाव होने वाले हैं। जिसे लेकर राज्य में चुनावी तैयारियां शुरू हो चुकी हैं। नेताओं के बीच आरोप और प्रत्यारोप का दौर भी शुरू हो चुका है। कांग्रेस ने भी अपने स्तर पर चुनाव की तैयारियां तेज कर दी है। इसी बीच कांग्रेस ने टिकट वितरण को लेकर एक नया सिस्टम तैयार किया है। जिससे सभी उम्मीदवारों को गुजरना पड़ेगा। कांग्रेस ने ऐलान किया है कि आगामी विधानसभा चुनाव में टिकट वितरण को लेकर कांग्रेस अपने उम्मीदवारों को ऐसे ही टिकट नहीं थमा देगी। उसके लिए उम्मीदवारों को सबसे पहले अपना इंटरव्यू देना होगा। तब जाकर बात कहीं आगे बढ़ेगी। कांग्रेस की ओर से बताया गया कि इंटरव्यू के लिए कांग्रेस ने 6 टीमों को तैयार किया है। जो उम्मीदवारों का इंटरव्यू लेने का काम करेंगे। इस टीम में पृथ्वीराज चव्हाण, नसीम खान, सांसद चंद्रकांत हंडोरे, प्रणीति शिंदे, सतेज पाटिल, अमित देशमुख, नितिन राऊत, यशोमति ठाकुर सहित अन्य नेता शामिल हैं। 1 अक्टूबर से चुनाव लड़ने के लिए इच्छुक उम्मीदवारों के इंटरव्यू की प्रक्रिया शुरू हो जाएगी। यह इंटरव्यू प्रक्रिया 1 से 8 अक्टूबर तक चलेगी। 10 अक्तूबर को इंटरव्यू लेने वाली टीमें अपना सीक्रेट रिपोर्ट प्रदेश कांग्रेस को सौंपेंगी। जिसके बाद टिकट के लिए उम्मीदवारों के नामों का ऐलान होगा। बता दें कि अभी तक महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव के लिए कुल 1688 इच्छुक उम्मीदवारों ने कांग्रेस पार्टी से चुनाव लड़ने के लिए टिकट मांगा है। चुनाव आयोग ने महाराष्ट्र-झारखंड में चुनाव कराने के लिए अपनी कमर कस ली है। इसी बीच चुनाव आयोग ने झारखंड और महाराष्ट्र का दौरा पूरा कर लिया है। बीते शुक्रवार को श्वष्ट ने महाराष्ट्र का दौरा किया। हालांकि हरियाणा और जम्मू-कश्मीर चुनाव के नतीजे 8 अक्टूबर को आएंगे। ऐसे में माना जा रहा है कि परिणामों की घोषणा के बाद ही महाराष्ट्र-झारखंड विधानसभा चुनाव 2024 का ऐलान हो जाएगा। ज्यादातर राजनीतिक दलों की मांग है कि चुनाव आयोग फेस्टिव सीजन को ध्यान में रखकर दोनों राज्यों में एक ही चरण में चुनाव कराए। अब देखने वाली बात ये होगी कि चुनाव आयोग इस पर अपना अंतिम फैसला क्या लेता है।

दिल्ली के उत्तम नगर में बीजेपी नेता की कार पर फायरिंग

नई दिल्ली: दिल्ली के उत्तम नगर में गुरुद्वारे के बाहर खड़ी गाड़ी बीजेपी नेता रमनजोत सिंह की गाड़ी पर अज्ञात बदमाशों ने फायरिंग की। जानकारी के अनुसार, पीड़ित बीजेपी सिख नेता की गाडी पर सोमवार रात 9.30 बजे के आसपास एक बदमाश ने फायरिंग कर धमकी की पर्ची डालकर फरार हो गया। पर्चा पर लास्ट वार्निंग के साथ ही गैंगस्टर गोगी मान का नाम भी लिखा हुआ है। बीजेपी नेता रमनजोत सिंह ने बताया कुछ दिन पहले इंटरनेशनल नम्बर से खलिस्तानियों के नाम से भी धमकी का फोन आया था। इसकी शिकायत पुलिस को दी थी। फिलहाल पुलिस मामले की जांच कर रही है।

पुलिस के अनुसार, द्वारका के बिंदापुर इलाके में पंखा रोड पर स्थित जेजे कॉलोनी में गुरुद्वारे के सेवादार

ने रमन जोत सिंह (30) को सूचित किया कि पास में खड़ी उनकी एसयूवी पर एक धमकी भरा पत्र मिला है। पत्र में लिखा है कि कोई सिक्योरिटी काम नहीं आएगी तेरी, आखिरी चेतावनी.. गोगी मान गिरोह। पुलिस ने बताया कि बीजेपी नेता को पहले सुरक्षा उपलब्ध करायी गयी थी लेकिन सुरक्षा स्थिति की समीक्षा के बाद निजी सुरक्षा अधिकारी हटा दिया गया था। उन्होंने बताया कि गुरुद्वारे के आस-पास के सीसीटीवी कैमरों की फुटेज खंगाली जा रही है। उधर, दिल्ली पुलिस ने गैंगस्टर हाशिम बाबा के नाम से एक कारोबारी से रंगदारी मांगने के आरोप में एक व्यक्ति को गिरफ्तार किया है। अधिकारियों ने सोमवार को यह जानकारी दी। पुलिस ने बताया कि आरोपी मोहसिन खान (30) ने एक सजायाफ्ता नार्को तस्कर की ओर से रंगदारी की मांग की थी। एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी ने बताया कि चांदनी चौक में सूखे मेवों का कारोबार करने वाले 40 वर्षीय व्यवसायी को नौ सितंबर को एक धमकी भरा कॉल और मैसेज मिला। कॉल करने वाले ने खुद को तिहाड़ जेल में बंद हाशिम बाबा बताया और 17 लाख रुपये की रंगदारी मांगी।

पलटते-पलटते बची केरला एक्सप्रेस ट्रेन

टूटी पटरी पर दौड़ी, यात्रियों की अटक गई सांस

ललितपुर- यूपी के ललितपुर में एक बड़ा ट्रेन हादसा टल गया है। ये हादसा इतना बड़ा हो सकता था, जिसमें सैकड़ों यात्रियों की जान जा सकती थी। दरअसल यहां पर केरला एक्सप्रेस ट्रेन टूटी पटरी पर दौड़ गई। जब तक लोको पायलट ने इमरजेंसी ब्रेक लगाया, तब तक ट्रेन टूटी पटरी से आगे निकल चुकी थी। तिरुवंतपुरम से चलकर नई दिल्ली जाने वाली केरला एक्सप्रेस बड़े हादसे का शिकार होने से बची है। ललितपुर में रेल प्रशासन की गलती के चलते ट्रेन को ललितपुर के पास टूटी पटरी पर चढ़ा दिया गया। ट्रैक पर काम कर रहे रेलकर्मियों ने ट्रेन को रोकने के लिए लाल झंडी दिखाई लेकिन तब तक ट्रेन के तीन कोच टूटी पटरी से आगे निकल गए थे। हालही में महोबा जिले के कबरई थाना क्षेत्र में रेल की पटरी पर कंक्रीट का खंभा रखने का मामला सामने आया था। इस खंभे को एक पैसेंजर ट्रेन के चालक ने देख लिया था, जिसके बाद इमरजेंसी ब्रेक लगाकर ट्रेन रो रोका गया था। इस मामले की प्राथमिकी भी दर्ज की गई थी और एक 16 साल के लड़के को हिरासत में लिया गया था।

शनिवार को बलिया में भी ऐसा ही मामला सामने आया था।

बलिया जिले के बैरिया क्षेत्र में भी शनिवार को रेल इंजन, पटरी पर रखे पत्थर से टकरा गया था। हालांकि इस घटना में कोई नुकसान नहीं हुआ था। पूर्वोत्तर रेलवे के जनसंपर्क अधिकारी अशोक कुमार ने इस बारे में जानकारी दी थी और बताया था कि शनिवार को वाराणसी-बलिया-छपरा रेल खंड पर पूर्वाह्न करीब 10.25 बजे पटरी पर पत्थर मिला। उन्होंने बताया कि लखनऊ से छपरा (बिहार) जा रही 15054 लखनऊ-छपरा एक्सप्रेस के इंजन का 'कैटल गार्ड' पत्थर से टकराया। कुमार ने बताया कि पटरी पर पत्थर देखकर लोको पायलट ने आपात ब्रेक लगा दी। बता दें कि उत्तर प्रदेश में पटरी पर गैस सिलेंडर, खंभे आदि मिलने की कई घटनाएं हाल के दिनों में सामने आई हैं।

बिहार के इंजीनियर ने बनाया पानी पर तैरने वाला घर

आरा-बिहार के आरा के रहने वाले एक इंजीनियर ने पानी पर तैरने वाला घर बनाया है, जो हर साल आने वाली बाढ़ से प्रभावित नहीं होगा। बाढ़ आने पर यह घर डूबने के बजाय तैरने लगेगा। इस घर को गंगा नदी के रास्ते बक्सर से पटना तक ले जाया जा रहा है और उम्मीद की जा रही है कि यह 15 अक्टूबर तक पटना पहुंच जाएगा। प्रशांत ने लगभग 1 हजार स्क्वायर फीट में ये घर बनाया है। इस घर को पानी में तैरने के लिए 108 वेस्ट घरेलू ड्रम का इस्तेमाल किया गया है। प्रशांत कुमार और उनकी टीम ने इस घर को बनाने के लिए मिट्टी, घास-फूस, सुरकी-चूना, बांस और कचरे से बनी चीजों का इस्तेमाल किया है।

आतिशी के सीएम बनते ही दिल्ली में आम आदमी पार्टी को बड़ा झटका

आम आदमी पार्टी के कई नेता और कार्यकर्ता रविवार को कांग्रेस की दिल्ली इकाई के अध्यक्ष देवेंद्र यादव की मौजूदगी में उनकी पार्टी में शामिल हो गए। एक आधिकारिक बयान में यह जानकारी दी गई है।दिल्ली कांग्रेस के अध्यक्ष देवेंद्र यादव ने प्रदेश कांग्रेस कार्यालय में पार्टी में उनका स्वागत करते हुए उन्हें कांग्रेस का पटका भेंट किया। देवेंद्र यादव ने कहा कि राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में कानून-व्यवस्था की स्थिति चरमरा गई है तो इसके लिए भाजपा और आप दोनों सरकारें समान रूप से जिम्मेदार हैं। यादव ने कहा कि जेल से बाहर आने के बाद अरविंद केजरीवाल अपनी सरकार के मंत्रियों समेत सभी में खामियां ढूंढने में लगे हैं। वह यह भूल गए हैं कि जेल में रहने के दौरान उन्होंने पांच महीने से अधिक समय तक मुख्यमंत्री की कुर्सी नहीं छोड़ी थी। उन्होंने कहा कि इससे दिल्ली में शासन व्यवस्था ठप हो गई थी, जब राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली जलभराव की समस्या से जूझ रही थी।

डिब्बों और बोरे में भरकर ले जा रहे थे मांस, गोहत्या के आरोप में 23 के खिलाफ दर्ज हुई एफआईआर

प्रयागराज के एयरपोर्ट थाने में गोकशी के आरोप में तीन नामजद और 20 अज्ञात लोगों के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज की गई है। शिकायतकर्ता वंशिका गुप्ता की तहरीर पर एयरपोर्ट थाने में सोमवार को शमशाद, आरिफ, नूर अली के बेटे और 20 अन्य अज्ञात लोगों के खिलाफ भारतीय न्याय संहित की धारा 131 और गौ हत्या निवारण अधिनियम के तहत प्राथमिकी दर्ज की गई। शिकायतकर्ता ने तहरीर में कहा कि 30 सितंबर को सुबह पांच बजे गोकशी की सूचना मिलने पर बजरंग सेना गोरक्षा प्रकोष्ठ के जिला अध्यक्ष कृष्ण श्रीवास्तव और महामंत्री रितिक यादव भीटी गांव के पीछे नदी के पास पहुंचे। वंशिका का आरोप है कि कृष्ण श्रीवास्तव और रितिक यादव ने भीटी गांव के पीछे नदी के पास पहुंचकर देखा कि 15-20 लोग गोवंशों का वध कर उन्हें डिब्बों और बोरे में भरकर बेचने ले जा रहे हैं। आरोपियों की नजर जैसे ही कृष्ण और रितिक पर पड़ी तो वे उन्हें जान से मारने के लिए दौड़े तथा दोनों किसी तरह जान बचाकर भागे। कृष्ण श्रीवास्तव की सूचना पर विश्व हिंदू परिषद के जिला उपाध्यक्ष (दक्षिण) अशोक सिंह चौहान विहिप कार्यकर्ताओं के साथ घटनास्थल पर पहुंचे। तब तक एयरपोर्ट थाने का दल भी घटनास्थल पर पहुंच गया। प्राथमिकी के अनुसार, मौके पर गोवंश का मांस, खाल और खून मिला जिसकी वीडियोग्राफी की गई है। मुख्य पशु चिकित्साधिकारी द्वारा गोमांस और खाल के नमूने लेकर जांच के लिए भेजे गए हैं।

1 लाख चूहों ने बंद कराया जयपुर का ऐतिहासिक रामनिवास बाग, खोखली हो गई जमीन

जयपुर के ऐतिहासिक 'रामनिवास बाग' और 'अल्बर्ट हॉल' को चूहों के आतंक व खतरे से मुक्त कराने के लिए 2 दिवसीय अभियान सोमवार को शुरू हुआ। अधिकारियों का कहना है कि इस इलाके में चूहों की संख्या अत्यधिक बढ़ गई है और उन्होंने बाग की जमीन को खोद दिया है जिससे वहां स्थित 'अल्बर्ट हॉल' भवन प्रभावित हो रहा है। जयपुर विकास प्राधिकरण (जेडीए) की टीम ने इस पूरे इलाके को चूहों से मुक्त कराने के लिए दो दिवसीय अभियान सोमवार सुबह शुरू किया। अधिकारियों ने बताया कि इसके तहत 'रामनिवास बाग', 'अल्बर्ट हॉल' और बाग में स्थित अन्य स्थल सोमवार और मंगलवार को दो दिन के लिए बंद रहेंगे। अधिकारी चूहों को मारने के लिए बड़े पैमाने पर कीटनाशकों का इस्तेमाल करेंगे। तत्कालीन महाराजा सवाई रामसिंह द्वारा 1868 में निर्मित इस बाग में शानदार 'अल्बर्ट हॉल' है, जिसमें अब संग्रहालय भी चलता है। हालांकि, पिछले कुछ समय से ये दोनों प्रतिष्ठित स्थान चूहों के प्रकोप से त्रस्त हैं। चूहों ने बाग की जमीन को खोद दिया है, वहां असंख्य बिल बना लिए हैं और बाग में स्थित 'अल्बर्ट हॉल' भी इससे प्रभावित हो रहा है।

दोस्त से बाइक मांगना पड़ा महंगा, लौटाने में देर हुई तो पत्थर मारकर की हत्या

शहडोल। जिले के ब्यौहारी क्षेत्र में एक हैरान कर देने वाला मामला सामने आया है। यहां एक ग्रामीण को पड़ोसी की बाइक लेकर जाना इतना महंगा पड़ा कि उसको अपनी जान गंवानी पड़ी। दरअसल रमेश कोल व बिज्जु पंडित के बीच बाइक लेनदेन को लेकर हुए मामूली विवाद में बिज्जु ने रमेश की पत्थर मारकर हत्या कर दी। मामले की जानकारी मिलने के बाद मौके पर पहुंची ब्यौहारी पुलिस ने मर्ग कायम कर लिया और मामले की जांच में जुट गई है। पूरी घटना ब्यौहारी थाना क्षेत्र के सीधी रोड बंधा टोला ग्राम साखी की बताई जा रही है। दरअसल, ब्यौहारी थाना क्षेत्र के ग्राम साखी बंधा टोला के रहने वाले रमेश कोल के घर पड़ोस में रहने वाला बिज्जू पंडित अपने दो अन्य साथियों के साथ आया। सभी ने आपस में मिलकर जाम छलकाए। इस दौरान रमेश, बिज्जू की बाइक लेकर मार्केट की ओर चला गया। काफी देर तक रमेश, बिज्जू की बाइक लेकर वापस नहीं आया तो नाराज बिज्जू उसे ढूंढने निकल पड़ा। तभी सीधी रोड बंधा के पास रमेश बाइक से घूमता मिला। इसके बाद बाइक ना पहुंचाने को लेकर दोनों में विवाद हो गया। विवाद के दौरान बिज्जू ने रमेश पर पत्थर से हमला कर दिया। वहीं पत्थर से चोट लगने के बाद रमेश की मौत हो गई।

राजसमंद में दो लड़कों के साथ मारपीट के बाद तनाव का माहौल

राजसमंद। राजसमंद में दो युवकों के साथ मारपीट के बाद माहौल गरमा गया। इस घटना के बाद बड़ी तादाद में लोग जुट गए। गुस्साई भीड़ ने वाहनों के शीशे फोड़ दिए। घटना की जानकारी मिलने के बाद पुलिस ने मौके पर पहुंच कर हालात को संभाला। मारपीट की घटना की खबर मिलते ही शहर में तनाव का माहौल बन गया। लोग आरोपियों को गिरफ्तार करने की मांग करने लगे। डिप्टी एसपी विवेक सिंह के मुताबिक राजनगर पुलिस थाना सर्कल में मामू भाणेज रोड पर कृष्णा और राहुल बैठे हुए थे। इस दौरान वहां 3-4 युवक आए। कहासुनी के बाद उन्होंने दोनों युवकों को पीट दिया। इसके बाद युवकों के परिजनों ने राजनगर पुलिस थाने पर रिपोर्ट दर्ज कराई है। पुलिस ने मामला दर्ज कर आरोपियों की तलाश शुरू कर दी है। फिलहाल क्षेत्र में शांति स्थिति बनी हुई। लोग किसी भी प्रकार की अफवाह पर ध्यान न दें। घटना के बाद एएसपी महेंद्र पारिक, डीएसपी विवेक सिंह, कांकरोली पुलिस थाना इंचार्ज हनवंत सिंह सोढा, राजनगर पुलिस थाना इंचार्ज रमेश मीणा सहित नाथद्वारा डीवाइएसपी व बड़ी संख्या में पुलिस बल मौके पर पहुंच गया।

शर्मा जी बनकर भारत में रह रहा था पाकिस्तान का सिद्दीकी परिवार

बेंगलुरु में अवैध रूप से शर्मा परिवार की पहचान के साथ रह रहे पाकिस्तानी परिवार को गिरफ्तार किया है। पाकिस्तान के कराची का राशिद अली सिद्दीकी %शंकर शर्मा बनकर अपनी बीवी और सास-ससुर के साथ बेंगलुरु में रह रहा था। पुलिस ने बताया कि संदिग्ध राशिद अली सिद्दीकी, उसकी पत्नी आयशा और उसके पिता हनीफ मोहम्मद और मां रुबीना बेंगलुरु आउटर के राजपुरा गांव में शर्मा परिवार बनकर रह रहे थे। उन्होंने अपना नाम शंकर शर्मा, आशा रानी, राम बाबू शर्मा और रानी शर्मा रखा हुआ था।वह आसपास के हिंदुओं को इस्लाम में कन्वर्ट करने में भी लगा था इसके लिए उसे पाकिस्तान से फंडिंग होती थी। साथ ही बेंगलुरु में रहने वाले कई स्थानीय मुसलमान भी उसकी मदद कर रहे थे फिर अचानक

एक चूक हुई और 10 साल बाद उसकी पुरी पोल खुल गई। पुलिस ने चारों के खिलाफ केस दर्ज कर अरेस्ट कर लिया है।

मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक खुफिया इनपुट के आधार पर चेन्नई एयरपोर्ट से 2 पाकिस्तानियों को गिरफ्तार किया गया था। वे ढाका फ्लाइट पकड़कर चेन्नई पहुंचे थे। उन्होंने पूछताछ में खुद को भारतीय बताया लेकिन जब उनके पासपोर्ट चेक किए गए तो वे फर्जी निकले। इसके बाद उनसे पूछताछ हुई तो बेंगलुरु में चोरी-छुपे रहे ऐसे पाकिस्तानी परिवार का पता चला, हिंदू परिवार के पहचान के साथ वहां रह रहा था। रविवार को जब पुलिस गिरफ्तारी के लिए पहुंची तो सिद्दीकी परिवार पैकिंग ही कर रहा था। पूछताछ में उसने खुद को शर्मा बताया और कहा कि वे लोग 2018 से बेंगलुरु में रह रहे हैं। जांच के दौरान परिवार के भारतीय पासपोर्ट और आधार कार्ड भी पेश किए गए जिसमें उनकी हिंदू पहचान दर्ज है। जब पुलिस घर के अंदर पहुंची तो उन्हें मेहंदी फाउंडेशन इटरनेशनल जश्न-ए-यूनुस दीवार पर लिखा मिला। साथ ही घर में कुछ मौलवियों की तस्वीरें भी थीं।

गोहद सीएमओ ने सीएम हेल्पलाइन का बनाया मजाक, बिना निरीक्षण के कागजों में बना दिया नाला

शिकायतकर्ता ने कलेक्टर से अपील कर की दोषियों पर कार्यवाही की मांग की

दैनिक पुष्पांजली टुडे

भिण्ड । भिंड जिले में नगर पालिकाओं की बात की जाए तो नगर पालिका कम नरक पालिका ज्यादा बनी हुई है,आलम यहां तक है कि शिकायतकर्ता अपनी समस्या को सीएम हेल्पलाइन पर दर्ज करा दे तो गोहद सीएमओ उसे फर्जी तरीके से बंद करा कर जिला प्रशासन और शासन की आंखों में धूल झोंकने का काम कर रहे हैं,बिना मौका स्थल चेक किए ही कागजों में ही निराकरण कर दिया जाता है । जिसका उदाहरण हाल ही में गोहद नगर पालिका के शिकायतकर्ता विजय निगम बने,उन्होंने कलेक्टर संजीव श्रीवास्तव से अपनी समस्याओं और फर्जी तरीके से बंद शिकायत के खिलाफ दोषियों पर कार्यवाही की मांग की,उन्होंने बताया नगर पालिका ने बिना नाला निर्माण किए ही सड़क बना दी जिससे वार्ड वासियों के घरों में पानी भरने लगा जिसकी वार्ड वासियों ने सीएम हेल्पलाइन पर शिकायत दर्ज कराई,पर गोहद सीएमओ का तानाशाह रवैया के चलते बिना निरीक्षण किए ही उनकी शिकायतों को कागजों में झूठे निरीक्षण बता कर बंद कर दिया गया।गोहद सीएमओ द्वारा अंधेर नगरी चौपट राजा जैसा काम किया जा रहा है वार्ड वासियों ने बताया नाला 2018 में स्वीकृत हुआ था लेकिन यह नाला अभी तक बना नहीं है,इसको लेकर प्रार्थी एवं मोहल्ले वासियों के द्वारा द्वारा सी.एम. हेल्पलाइन पर शिकायत दर्ज कराई गई थी जिसमें सीएमओ प्रीतम माझी वाहवाही लूटने के लिए उक्त शिकायतो में उनके द्वारा

गलत जानकारी भर दी गई है।

(1) शिकायतकर्ता विजय निगम शिकायत क्रमांक 28936164 दिनांक 16.09.24 को सी.एम. हेल्पलाइन पर दर्ज कराई थी जिसका सीएमओ द्वारा निराकारण किया।÷ पानी की निकासी कच्ची नाली खोदकर करादी गई है एवं स्थल पर सफाई कराई गई है वर्तमान में उक्त स्थल पर सफाई हेतु कोई समस्या नहीं है। शिकायतकर्ता अभिषेक निगम शिकायत क्रमांक 28929142 शिकायतकर्ता द्वारा सीएम हेल्पलाइन पर दर्ज कराई गई थी जिसमें सीएमओ द्वारा किया गया निराकरण इस प्रकार है,निकाय के निर्माण शाखा बाबू के द्वारा शिकायतकर्ता के बताये गये स्थल पर निरीक्षण किया गया है,उक्त सडक पर मिटटी मुरम डालकर भराव कर दिया गया है, जिससे आवागमन में नागरिकों को कोई परेशानी नहीं हो रही है शिकायतकर्ता विकास कुमार शिकायत क्रमांक 28940506 सीएम हेल्पलाइन पर दर्ज कराई थी जिसमें सीएमओ द्वारा निराकरण किया गया इस प्रकार है,उक्त स्थल पर निकाय के उपयंत्री द्वारा मौका निरीक्षण किया गया निकाय के द्वारा स्टीमेन्ट अनुसार नाला का निर्माण करा दिया गया है,शिकायतकर्ता द्वारा स्टीमेन्ट से अधिक नाला निर्माण कार्य कराने हेतु मांग कर रहा है जो निकाय द्वारा नाला निर्माण कार्य कराया जाना संभव नहीं है । यह तीनों शिकायतों में एक ही मांग की गई है, लेकिन सीएमओ को द्वारा वाहवाही लूटने के लिए ऑफिस में बैठकर अपनी मनमर्जी से गलत निराकरण कर वरिष्ठ अधिकारियों को गुमराह कर यह अपराध की श्रेणी में आता है,इसलिये मौका स्थल की जांच करा कर झूठी जानकारी पाए जाने पर कानूनी कार्रवाई की जाने की अपील कलेक्टर से की गई है। जिससे भविष्य में कोई सी.एम. हेल्पलाइन पर झूठी जानकारी ना भरे।

स्वच्छता ही सेवा पखवाड़े के अंतर्गत रैली निकालकर की साफ सफाई

अर्पित गुप्ता उपसम्पादक पुष्पांजली टुडे

ग्वालियर। शासकीय कमला राजा कन्या स्नात्तकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय में राष्ट्रीय सेवा योजना के द्वारा दिनांक 30/9/24 को स्वच्छता अभियान का कार्यक्रम अयोजित किया गया।जिसमें छात्राओं ने परिसर में साफ सफाई की गई।इस स्वच्छता अभियान में महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ.जय श्री चौहान एवं जन भागीदारी अध्यक्ष श्रीमती मीना सचान तथा तीनों कार्यक्रम अधिकारी द्वारा स्वयं झड़ू लगाकर स्वच्छता मे सहयोग प्रदान किया व परिसर में उपस्थित सभी छात्राओं को स्वछता का महत्व समझाया एवं छात्राओं ने कॉलेज कैंपस में रैली निकालकर स्वच्छता का महत्व बताया।महाविद्यालय के बाहर मानव श्रृंखला बनाकर नारे लगाएं एवं साथ ही छात्राओं ने स्वच्छता पखवाड़े के अंतर्गत अपने हाथों में मेहंदी द्वारा स्लोगन लिखे गए।तो वहीं दिनांक 01/09/24 को शासकीय कमलराजा कन्या स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय में स्वच्छता ही सेवा 2024 पखवाड़े के अंतर्गत राष्ट्रीय सेवा योजना की स्वयंसेविकाओं द्वारा पतंगों पर आवाज उठाओ गंदगी को मिटाओ।स्वच्छता है तो स्वास्थ्य है।स्वास्थ्य है तो समृद्धि है।हर व्यक्ति का एक ही सपना,÷स्वच्छ बने भारत अपना।÷ आदि नारें लिखकर स्वच्छता का संदेश दिया।इसके बाद छात्राओं ने स्वयं पेपर बैग बैंग बनाकर ÷नो प्लास्टिक÷का संदेश दिया और छात्राओं ने कंपू परिसर दुकान व केले वाले लोगों को पेपर बैग वितरित कर कर पॉलिथीन या प्लास्टिक बैंग के स्थान पर बैंग अथवा कपड़े के थैलें का उपयोग करने का संदेश दिया।संपूर्ण कार्यक्रम महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ.जय श्री चौहान के संरक्षण में एवं रा.से.यों. इकाई की कार्यक्रम अधिकार डॉ.कृष्णा सिंह डॉ.मीना श्रीवास्तव,डॉ.संगीता सोमवंशी के मार्गदर्शन में हुआ।कार्यक्रम में अत्यधिक संख्या में छात्राएं उपस्थित रहीं।

संत महात्माओं का हुआ सम्मान

दैनिक पुष्पाजंली टुडे

बेंगलूरू। मानव उत्थान सेवा समिति शाखा बेंगलुरु में सतगुरु देव सतपाल महाराज के शिष्य महात्मा तुरियानंद और महात्मा गुणवंतानंद ने रविवार 29 सितंबर को प्रचार कार्यभार संभाला। संस्था की ओर नारायण लाल चोयल, प्रेम किशोर ,हरबंस लाल शर्मा और संपत कृष्ण ने माल्यार्पण कर संत महात्माओं का स्वागत किया। महात्मा तुरियानंद ने मनुष्य के जीवन में अध्यात्म और विज्ञान के संगम पर प्रकाश डाला। जिस प्रकार से मनुष्य भौतिक जगत में इंटरनेट और वाई-फाई के माध्यम से देश-विदेश में कहीं भी चंद फलों में जुड़ जाता है उसी तरह तत्वदर्शी महापुरुष से अध्यात्म ज्ञान की प्राप्ति कर मनुष्य आंतरिक जगत की यात्रा करके पल भर में परमपिता परमात्मा की असीम शक्ति का अनुभव कर सकता है। यह प्रेस विज्ञप्ति संस्था की बेंगलुरु शाखा के मीडिया प्रभारी अमनदीप चौहान ने दी।

भ्रष्टाचारी जाने चाहिए जेल

एटा भारतीय हलधर किसान यूनियन के राष्ट्रीय अध्यक्ष धीरेन्द्र सोलंकी द्वारा अधिशाषी अभियंता तुषार राजन पर बड़े गंभीर आरोप लगाए. उन्होंने प्रेस वार्ता के दौरान कहा कि निधोली कला क्षेत्र की जनता की सारी खडी फसल जलमग्न हो चुकी है. अधिशाषी अभियंता राजन ने सोरखा गाँव की किसान जनता के ऊपर एफ.आई.आर. लिखा दी है जो कि सरासर झूठी है। जबकि भारत भूषण जनपद एटा में करीब आठ वर्ष से इसी पद पर तैनात है. आगे कहा कि यह नियम के विरुद्ध है।सरकार को भी इस नियुक्ति पर सवाल उठाये. राष्ट्रीय अध्यक्ष ने कहा कि सोरखा गाँव से झगड़े पर लिखाई गई शिकायत में प्रशासन के अधिकारियो को भी घेरा है. यह जाँच का विषय है कि थाने की पुलिस और तहसील अधिकारियो के मौजूद होते भी गाँव के लोगों ने हमला कर दिया.ऐसे कैसे हो गया। इस आरोप पर अधिशाषी अभियंता की भी जाँच होनी चाहिए.. अरिन्द नदी की सिल्ट उठाने में अगर सही रूप से जाँच की गई तो कई बड़ेअधिकारी सहित अधिशाषी अभियंता तुषार राजन की भूमिका सामने आएगी. क्योंकि जिस दिन झगड़े की बात कही जा रही है उस दिन तुषार राजन के साथ आखिर सिचाई विभाग में

करने वाले ठेकेदार क्या कर रहे थे। अध्यक्ष ने यह भी आरोप लगाया कि कई बार सिचाई विभाग के मंत्री स्वतंत्र देव को अरिन्द नदी की सफाई की लिखित शिकायत भी की थी. उसके बाद जिलाधिकारी एटा को बताया गया था लेकिन किसान जनता की आवाज को विभाग द्वारा दबाया गया था जिसके परिणाम यह हुए कि आज किसान जनता के खेतो में पानी भरा हुआ है. जिसकी सुनवाई तो नहीं की जा रही है किसान जनता पर मारपीट का आरोप लगा कर जेल भेजनें की तैयारी कर दी गई है. भारतीय हलधर किसान यूनियन के राष्ट्रीय अध्यक्ष ने हुंकार भरते हुए कहा कि किसान जनता कि आवाज के लिए अब हलधर यूनियन सामने आ चुकी है किसानो की आवाज भी हम बनेगे और सहारा भी हम बनेगे। इस लड़ाई को लखनऊ तक लड़ा जायेगा साथ ही प्रत्येक राज्य के पदाधिकारी जनपद में जमा होकर इस सिचाई विभाग के खिलाफ आंदोलन छेड़ेंगे और इस भ्रस्टाचार में लिप्त सभी अधिकारियो को जेल भेजनें का कार्य करेंगे। प्रेस वार्ता में शामिल होने के लिए राष्ट्रीय अध्यक्ष धीरेन्द्र सोलंकी, सुधीर राधव, साजन देव वार्ष्णेय, जय प्रकाश, रानू ठाकुर, सचिन वशिष्ठ,अजय वर्मा, सचिन यादव, रविश गोला आदि पदाधिकारी उपस्थित थे।

महात्मा गांधी एवं लाल बहादुर शास्त्री की जिला कांग्रेस 2 अक्टूबर को जयंती मनाएगी

दैनिक पुष्पांजली टुडे

भिण्ड । कांग्रेस कमेटी जिला मीडिया प्रभारी पंकज त्रिपाठी ने जारी प्रेस विज्ञप्ति में बताया कि राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी और पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री जी की जयंती के उपलक्ष्य में मध्यप्रदेश कांग्रेस कमेटी के निर्देशानुसार 2 अक्टूबर को जिले के समस्त शहर,ब्लॉक,नगर स्तर पर आयोजन किया जाना सुनिश्चित किया है। जिसमें श्रेद्धय महापुरूषों के प्रतिमाओं पर माल्यार्पण,प्रभातफेरी एवं विचार गोष्ठी का आयोजन किया जायेगा । इसी तारतम्य में भिण्ड मुख्यालय पर 2 अक्टूबर को प्रातः 10 = 30 बजे जिला कांग्रेस कार्यालय,बीटीआई रोड़,भिण्ड में कांग्रेस पार्टी विचार गोष्ठी आयोजित की जाएगी। जिला कांग्रेस ने सभी पदाधिकारीगण,वरिष्ठ नेतागण, विधायक व पूर्व विधायकगण, जिला व जनपद पंचायत के वर्तमान अध्यक्ष व पूर्व अध्यक्ष गण एवं पूर्व सदस्य गण,नगर पालिका व नगर पंचायत के वर्तमान व पूर्व अध्यक्ष एवं पार्षदगण,समस्त मोर्चा, विभागों, प्रकोष्ठों के अध्यक्षगण व पदाधिकारी गण एवं सम्माननीय कार्यकर्ता बंधुओं कांग्रेस जिला कार्यालय,बीटीआई रोड़,भिण्ड में एकत्रित होकर अपने महापुरुषों को श्रद्धासुमन अर्पित कर विचार गोष्ठी में शामिल होने की अपील की है।

अल्पविराम लेकर जीना,स्वयं के साथ गहरे जीने की प्रक्रिया है

महेंद्र शर्मा उपसंपादक पुष्पांजलि टुडे

ग्वालियर। राज्य आनंद संस्थान, आनंद विभाग भोपाल द्वारा शिवपुरी एवम श्योपुर जिले के विभिन्न विभागों के शासकीय सेवकों के साथ आवासीय वर्कशॉप आनंदम सहयोगी का आयोजन भारतीय पर्यटन यात्रा प्रबंधन संस्थान ग्वालियर में किया गया। कार्यक्रम में 60 प्रतिभागियों ने भाग लिया, जिनको मास्टर ट्रेनर्स द्वारा विभिन्न टूल्स के माध्यम से स्वयं से जुड़कर,स्वयं को जानने और ईमानदारी से शांतिमय, आनन्दमय जीवन जीने की प्रक्रिया को अपने अनुभवों के द्वारा समझाया गया। स्वयं की गहरी समझ बढ़ाने हेतु स्वयं को जानने के अभ्यास,आत्मपोषण एवं शांत समय के द्वारा कराए गए। सुधीर आचार्य,मनोज द्विवेदी,रिजबाना खान, केके बुटोलिया, प्रेमांजलि त्रिवेदी मास्टर ट्रेनर्स ने सत्रों का संचालन किया। आनंदम सहयोगी सपना पांडे,रेशमा हासमी,कीर्ति झा, रेखा श्रीवास्तव,नीतू ,गुप्ता ने विशेष सहयोग प्रदान किया।कार्यक्रम के तीन दिवसीय सत्र में नोडल आनंद (शिक्षा विभाग जिला ग्वालियर) तथा जिला योग प्रभारी दिनेश चाकणकर,निर्माता निर्देशक अतुल गंगवार,अतुल पांडे,विनोद चतुर्वेदी,हरिओम गौतम, मुख्य कार्यक्रम समन्वयक अवधेश कुमार शर्मा उपस्थित रहकर अंतिम दिवस पर प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र भी वितरित किए गए।सभी प्रतिभागियों ने फीडबैक देते हुए अपने अनुभवों को साझा किया। आभार जिला समन्वयक आनंद विभाग हेमंत त्रिवेदी ने किया।

आगामी त्यौहारों को लेकर थाना मौ थाना में शांति समिति की बैठक हुई संपन्न

पुष्पांजलि टुडे रिपोर्टर मौ डॉ बेताल सिंह गौड़

आज मौ नगर में आगामी त्यौहार नवदुर्गा दशहरा पर्व पर कानून व्यवस्था को लेकर मौ थाने पर शांति समिति की बैठक आयोजित हुई। बैठक में मुख्य रूप से मौ तहसीलदार उदय सिंह जाटव, मौ थाना प्रभारी डॉ संतोष यादव द्वारा उपस्थित सदस्यों से नवरात्रि पर होने वाले आयोजनों में चर्चा हुई की कोई भी व्यक्ति माता रानी की मूर्ति रखने के लिए मैन रास्ते को अवरुद्ध नहीं करेगा माता रानी की प्रतिमा के पास दो लोग रात्रि में रखेंगे 10 बजे के बाद कोई भी डीजे को नहीं बजाएगा और विसर्जन के दिन भी इसका विशेष ध्यान दिया जाए की कोई भी शराब पीकर धारदार हथियार एवं शस्त्र के सात विसर्जन करने नहीं जाएगा अगर कोई भी शासन के नियम निर्देश अनुसार इस त्यौहार को नहीं मनाएगा उसके खिलाफ वैधानिक कार्रवाई की जाएगी। मौ कस्बा में 8 से 10 स्थानों पर नवरात्रि पर्व पर मां की झांकियां लगाई जाएगी बैठक में मौ नगर के पत्रकार गण एवं गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

आगामी त्यौहारों को लेकर थाना लहार में शांति समिति की बैठक संपन्न

दैनिक पुष्पांजली टुडे

भिण्ड । नवदुर्गा (नवरात्रि),दशहरा पर्व पर कानून व्यवस्था को लेकर लहार थाने पर शांति समिति की बैठक का आयोजित की गई। बैठक में मुख्य रूप से लहार एसडीओपी प्रवीण त्रिपाठी,थाना प्रभारी लहार निरीक्षक रविंद्र शर्मा द्वारा उपस्थित सदस्यों से नवरात्रि पर होने वाले आयोजनों तथा दशहरा पर्व पर रावण के पुतलों के दहन पर बरतने वाली सतर्कताओं के बारे में विस्तार से चर्चा की गई। लहार कस्बा में सैंकड़ों स्थानों पर नवरात्रि पर्व पर माँ की झांकियां एवं भाटनताल लहार में दशहरा के अवसर पर रावण,कुंभकर्ण और मेघनाद के पुतलों का दहन किया जाएगा जिसमें आतिशबाजी का भी विशेष प्रोग्राम आयोजित होगा । बैठक में पत्रकार गण एवं गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे ।

संस्कार ही सफलता की कुंजी हैः प्राचार्य परमानन्द दीक्षित

दैनिक पुष्पांजली टुडे

भिण्ड । भारत विकास परिषद शाखा भिंड द्वारा गुरु वंदन छात्र अभिनंदन कार्यक्रम की श्रंखला को अनवरत रखते हुए आज शासकीय हाई स्कूल परा में कार्यक्रम का शुभारंभ सरस्वती पूजन करते हुए प्राचार्य परमानंद दीक्षित ने बताया कि प्राचीन भारतीय संस्कृति में गुरु और शिष्य के संबंधों का आधार उनके द्वारा दिए जाने वाले संस्कार थे। जीवन में एक अच्छा शिक्षक अपने हर शिष्य को सर्वश्रेष्ठ ज्ञान उपलब्ध करवाने का प्रयास करता है, जिससे कि उसके शिष्य का भविष्य उज्जवल हो और वो सफलता के नित नये आयाम स्थापित करके जीवन को सही मार्ग पर ले जा सके। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे परिषद के वरिष्ठ सदस्य व जिला मलेरिया अधिकारी डॉ. डी के शर्मा ने बताया कि आज के आधुनिक समय में किसी भी कामयाब व्यक्ति के जीवन पर नजर डाले,किसी भी छात्र के जीवन को सफल बनाने में शिक्षक बहुत ही अहम किरदार निभाता है। शिक्षक अपने छात्र को अच्छी शिक्षा देकर उन्हें देश का अच्छा नागरिक बनाता है। एवं बरसात के मौसम में होने वाली मलेरिया,डेंगू जैसी बीमारियो के बचाव हेतु बच्चों को जागरूक किया । कमलेश सैंथिया में भारत विकास परिषद की संरचना पर प्रकाश डालते हुए परिषद के क्रियाकलापों के बारे में सभी को अवगत कराया। जिसके उपरांत कार्यक्रम के मुख्य स्वरूप में विद्यालय से विभिन्न कक्षाओं में श्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों कु.दिशा,खुशबू,राजाबाबू, अंजली,सत्येंद्र,शिवम,गौरी,ज्योति, रूबी,रिंकू को उपस्थित अतिथियों द्वारा मेडल पहनाकर व प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया साथ ही दो श्रेष्ठ शिक्षकों में श्रीमती गीता,श्रीमती साधना सिंह,नीरज सिंह बघेल को शिक्षक सम्मान हेतु नामांकित किया गया । कार्यक्रम का संचालन सचिव राजमणि शर्मा ने किया कार्यक्रम के समापन में सभी ने गुरुओं के सम्मान व सदाचार की शपथ ली व सामूहिक रूप से राष्ट्रीय गान का गायन हुआ ।कार्यक्रम में शाखा अध्यक्ष कमलेश सैंथिया,कोषाध्यक्ष वीरेंद्र जोशी, सचिव राजमणि शर्मा सहित विद्यालय परिवार के समस्त स्टाफ तथा छात्र-छात्राएं उपस्थित रहे ।

संपादक की कलम से

मोदी का एक ही सपना : मुस्लिम बहुल राज्य में अपनी सरकार बनाने का

जम्मू-कश्मीर के मामले में हर प्रधानमंत्री का रोल ऐसा ही होता था। देश हित सबसे पहले। जनता पार्टी के लोग उस चुनाव में 1977 के बड़ी तादाद में चुनाव लड़े थे। मगर केन्द्र सरकार और राज्य प्रशासन की उन्हें कोई मदद नहीं मिली। नतीजा शेख अब्दुल्ला ने 76 में से 47 सीटें जीतकर सरकार बनाई। जनता पार्टी 13 सीटों पर जीती। कांग्रेस से ज्यादा। कांग्रेस को केवल 11 मिलीं। तोजो हमारी शंका थी उसी के अनुरूप प्रधानमंत्री मोदी ने जम्मू-कश्मीर में अपनी आखिरी सभा में दावा कर ही दिया। हालांकि ऐसा दावा कश्मीर को लेकर किसी प्रधानमंत्री ने कभी नहीं किया। सबने एक ही बात कही है कि पार्टी कोई भी जीते सरकार किसी की भी बने वहां जीत भारत के लोकतंत्र की होना चाहिए। नरसिम्हा राव से लेकर वाजपेयी और मनमोहन सिंह तक ने। मगर मोदी ने शनिवार को जम्मू में कहा कि पहली बार जम्मू-कश्मीर में भाजपा की पूर्ण बहुमत की सरकार बनने जा रही है। हम पहले से कहते रहे हैं कि- जम्मू- कश्मीर में लगातार चुनाव टाले जाने की एक ही वजह है कि मोदी को वहां अपना मुख्यमंत्री बनाए जाने की संभावना नहीं दिख रही है।

मोदी जी कहने को तो खुद की तुलना तो नेहरू-इंदिरा की करते हैं मगर जानते हैं कि उनका फील्ड बहुत बड़ा था। इतिहास में वे उनके मुकाबले कहीं नहीं टिक पाएंगे। इसलिए वे हिन्दुत्ववादी नेताओं में सबसे बड़े बनना चाहते हैं और इसके लिए देश के एकमात्र मुस्लिम बहुल प्रदेश में अपना मुख्यमंत्री बनाना चाहते हैं। आडवानी संघ सबको बताना कि देखो मैंने किया!

अब यह हो पाएगा या नहीं यह अलग मुद्दा है। मगर आतंकवाद के 35 साल के दौर में मोदी पहले ऐसे प्रधानमंत्री हैं जो वहां भारत की भाषा न बोलकर अपनी पार्टी की भाषा बोल रहे हैं। आतंकवाद के दौर में पहला चुनाव 1996 में हुआ था। प्रधानमंत्री थे नरसिम्हा राव। जम्मू -कश्मीर के चुनाव के बाद उन्हें अपने लोकसभा के चुनाव करवाना थे। कश्मीर में कांग्रेस का मुख्यमंत्री बनवाने का फायदा उन्हें लोकसभा चुनाव में मिल सकता था। मगर नरसिम्हा राव ने एक बार भी वहां कांग्रेस का मुख्यमंत्री बनाने की कोशिश नहीं की। फारूख अब्दुल्ला को बनवाया। सबकी सहमति थी कि कश्मीर में हालत सही करने के लिए और पाकिस्तान को मुंह तोड़ जवाब देने के लिए फारूख से उपयुक्त और कोई नहीं होगा। भाजपा की भी थी। जिसके नेता उस समय वाजपेयी, आडवानी और मुरली मनोहर जोशी थे।

यहां थोड़ा सा यह और बता दें कि आतंकवाद के दौर में या उससे पहले फ्री और फेयर इलेक्शन कम होता था। दिल्ली तय करती थी और कमोबेश वैसे ही नतीजे आते थे। 1951 में जब वहां कान्स्टिट्यूशनल असेम्बली का चुनाव था तो सभी 75 सीटों पर निर्विरोध चुनाव हो रहा था। शेख अब्दुल्ला सबसे बड़े नेता थे। जब उनसे कहा गया कि चुनाव होना चाहिए। तो उन्होंने कहा कि क्या मैं पापुलर नहीं हूं? दरअसल शेख अब्दुल्ला इसके जरिए पाकिस्तान और संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद को जवाब देना चाहते थे कि देखो जम्मू-कश्मीर ने एक मत से भारत के समर्थन का फैसला किया है। मगर संयुक्त राष्ट्र शेख अब्दुल्ला की यह योजना समझ गया था और उसने कहा कि वह इस चुनाव को जनमत संग्रह का विकल्प नहीं मानेगा।

जब शेख साहब को यह मालूम पड़ा तो फिर उन्होंने कुछ सीटों पर चुनाव करवाया। हालांकि रिजल्ट पूरा नेशनल कांन्फ्रेंस के पक्ष में आया। और यह जम्मू-कश्मीर में चुनावों की परंपरा बन गई। कहा जाता था कि अगर शेख साहब बिजली के खंबे को भी मेन्डेट दे दें तो वह भी जीत जाएगा। जम्मू-कश्मीर में पहला फ्री एंड फेयर चुनाव 1977 में हुआ था। मोरारजी देसाई ने करवाया था। हालांकि उन्हीं के सरकार के वरिष्ठ मंत्री जिनमें गृह मंत्री चरण सिंह और सबसे सीनियर मंत्री जगजीवन राम शामिल थे इस पक्ष में नहीं थे। उन्होंने कहा कि जैसे होते आए हैं वैसे होने दीजिए। मगर मोरार जी ने किसी की नहीं सुनी। मुख्य चुनाव आयुक्त भी कश्मीरी थे। बीएल शकधर ने उन्हें बुलाकर कहा कि एकदम स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव होना चाहिए। और वैसा ही हुआ। करीब 50 साल हो गए। जम्मू-कश्मीर के लोग आज भी याद करते हैं तो जम्मू-कश्मीर के मामले में हर प्रधानमंत्री का रोल ऐसा ही होता था। देश हित सबसे पहले। जनता पार्टी के लोग उस चुनाव में 1977 के बड़ी तादाद में चुनाव लड़े थे। मगर केन्द्र सरकार और राज्य प्रशासन की उन्हें कोई मदद नहीं मिली। नतीजा शेख अब्दुल्ला ने 76 में से 47 सीटें जीतकर सरकार बनाई। जनता पार्टी 13 सीटों पर जीती। कांग्रेस से ज्यादा। कांग्रेस को केवल 11 मिलीं। और जमाते इस्लामी को केवल एक। जबकि पिछले विधानसभा में उसके पास पांच सीटें थीं।कश्मीर में पाकिस्तान को सबसे पहला मौका कब मिला? 1987 के चुनाव में। यह चुनाव राजीव-फारूख समझौते के बाद हुआ था। दो सबसे बड़ी पार्टियां नेशनल कान्फ्रें स और कांग्रेस मिलकर चुनाव लड़े थे। मुकाबले में कई पार्टियों का एक महासंघ मुस्लिम युनाइटेड फ्रंट (मफ) बना। इस दौरान कई अलगाववादी नेता भी मुख्यधारा में आए थे। बाद में सबसे बड़े अलगाववादी और पाक समर्थक नेता बने सैयद अली शाह गिलानी ने वह चुनाव लड़ा था। और सोपोर से जीते थे।उनकी पार्टी जमाते इस्लामी के अलावा प्रो. अब्दुल गनी लोन जिनकी 2002 में आतंकवादियों ने हत्या कर दी थी, की पार्टी पीपुल्स कॉंफ्रेंस ने भी चुनावों में हिस्सा लिया था। मगर इस चुनाव के बारे में सबसे बड़ा आरोप है कि उसका रिजल्ट मतदान केन्द्रों में बदल दिया गया।

दीर्घ जीवन यानी वार्धक्य दीर्घ अभिशाप न बने

- ललित गर्ग -

हम पारिवारिक एवं सामाजिक जीवन में वृद्धों को सम्मान दें, इसके लिये सही दिशा में चले, सही सोचें, सही करें। इसके लिये आज विचारक्रांति ही नहीं, बल्कि व्यक्तिक्रांति की जरूरत है और इसी के लिये एक अक्टूबर को सम्पूर्ण विश्व में अंतरराष्ट्रीय वृद्ध दिवस मनाया जाता है। समाज और नई पीढ़ी को सही दिशा दिखाने और मार्गदर्शन के लिए वरिष्ठ नागरिकों के योगदान को सम्मान देने के लिए इस आयोजन का फैसला संयुक्त राष्ट्र ने 1990 में लिया था। इस दिन पर वरिष्ठ नागरिकों और बुजुर्गों का सम्मान किया जाता है। वरिष्ठों के हित के लिए चिन्तन भी होता है। प्रश्न है कि दुनिया में वृद्ध दिवस मनाने की आवश्यकता क्यों हुई? क्यों बूढ़ों की उपेक्षा एवं प्रताड़ना की स्थितियां बनी हुई है? चिन्तन का महत्वपूर्ण पक्ष है कि हम पतन के इस गलत प्रवाह को रोके। क्योंकि सोच के गलत प्रवाह ने न केवल वृद्धों का जीवन दुश्वार कर दिया है बल्कि आदमी-आदमी के बीच के भावात्मक फासलों को भी बढ़ा दिया है। वृद्ध अपने ही घर की दहलीज पर सहमा-सहमा खड़ा है, उसकी आंखों में भविष्य को लेकर भय है, असुरक्षा और दहशत है, दिल में अन्तहीन दर्द है। इन त्रासद एवं डरावनी स्थितियों से वृद्धों को मुक्ति दिलानी होगी। सुधार की संभावना हर समय है।

वृद्ध व्यक्तियों को सुखद एवं खुशहाल जीवन प्रदत्त करने के लिये हमें सर्वप्रथम तो उन्हें आर्थिक दृष्टि से स्वावलम्बी बनाने पर ध्यान देना होगा। बेसहारा वृद्ध व्यक्तियों के लिए सरकार की ओर से आवश्यक रूप से और सहज रूप मे मिल सकने वाली पर्याप्त पेंशन की व्यवस्था की जानी चाहिए। ऐसे वृद्ध व्यक्ति जो शारीरिक और मानसिक दृष्टि से स्वस्थ हैं, उनके लिए समाज को कम परिश्रम वाले हल्के-फुल्के रोजगार की व्यवस्था करनी चाहिए। वृद्धों के कल्याण के कार्यक्रमों को विशेष महत्व दिया जाना चाहिए, जो उनमें जीवन के प्रति उत्साह उत्पन्न करे। अधिकांश युवाओं की सोच इस रूप में पुख्ता हो जाती है कि संयुक्त परिवार व्यक्तिगत उन्नति में बाधक होते हैं। चीजों की ललक में स्वहित इतने हावी हो जाते हैं कि संवेदनहीनता मानवीय रिश्तों की महक को क्षण में काफूर कर देती है और तन्हा बुढ़ापा घुटनभरी सांसों के साथ जीने को बाध्य हो जाता है। हमें समझना होगा कि अगर समाज के इस अनुभवी स्तंभ को यूं ही नजरअंदाज किया जाता रहा तो हम उस अनुभव से भी दूर हो जाएंगे, जो इन लोगों के पास है। वृद्ध दिवस मनाना तभी सार्थक होगा जब हम उन्हें परिवार में सम्मानजनक जीवन देंगे, उनके शुभ एवं मंगल की कामना करेंगे।

आज का वृद्ध समाज-परिवार से कटा रहता है और सामान्यतः इस बात से सर्वाधिक दुःखी है कि जीवन का विशद अनुभव होने के बावजूद कोई उनकी राय न तो लेना चाहता है और न ही उनकी राय को महत्व देता है। समाज में अपनी एक तरह से अहमितय न समझे जाने के कारण हमारा वृद्ध समाज दुःखी, उपेक्षित एवं त्रासद जीवन जीने को विवश है। वृद्ध समाज को इस दुःख और कष्ट से छुटकारा दिलाना आज की सबसे बड़ी जरुरत है। आज हम बुजुर्गों एवं वृद्धों के प्रति अपने कर्तव्यों का निर्वाह करने के साथ-साथ समाज में उनको उचित स्थान देने की कोशिश करें ताकि उम्र के उस पड़ाव पर जब उन्हे प्यार और देखभाल की सबसे ज्यादा जरूरत होती है तो वो जिंदगी का पूरा आनंद ले सके। वृद्धों को भी अपने स्वयं के प्रति जागरूक होना होगा, जैसाकि जेम्स गारफील्ड ने कहा भी है कि यदि वृद्धावस्था की झुर्रियां पड़ती है तो उन्हें हृदय पर मत पड़ने दो। कभी भी आत्मा को वृद्ध मत होने दो।

प्रश्न है कि आज हमारा वृद्ध समाज इतना कुंठित एवं उपेक्षित क्यों है? अपने को समाज में एक तरह से निष्प्रयोज्य समझे जाने के कारण वह सर्वाधिक दुःखी रहता है। वृद्ध समाज को इस दुःख और संत्रास से छुटकारा दिलाने के लिये ठोस प्रयास किये जाने की बहुत आवश्यकता है। संयुक्त राष्ट्र ने विश्व में बुजुर्गों के प्रति हो रहे दुर्व्यवहार और अन्याय को समाप्त करने के लिए और लोगों में जागरूकता फैलाने के लिए अंतरराष्ट्रीय बुजुर्ग दिवस मनाने का निर्णय लिया। वृद्धों की समस्या पर संयुक्त राष्ट्र महासभा में सर्वप्रथम अर्जेंटीना ने विश्व का ध्यान आकर्षित किया था। तब से लेकर अब तक वृद्धों के संबंध में अनेक गोष्ठियां और अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन हो चुके हैं। वर्ष 1999 को अंतर्राष्ट्रीय बुजुर्ग-वर्ष के रूप में भी मनाया गया। इससे पूर्व 1982 में विश्व स्वास्थ्य संगठन ने वृद्धावस्था को सुखी बनाइए जैसा नारा दिया और सबके लिए स्वास्थ्य का अभियान प्रारम्भ किया गया।

एक पेड़ जितना ज्यादा बड़ा होता है, वह उतना ही अधिक झुका हुआ होता है यानि वह उतना ही विनम्र और दूसरों को फल देने वाला होता है, यही बात समाज के उस वर्ग के साथ भी लागू होती है, जिसे आज की तथाकथित युवा तथा उच्च शिक्षा प्राप्त पीढ़ी बूढ़ा कहकर वृद्धाश्रम में छोड़ देती है। आदमी जीवनमूल्यों को खोकर आखिर कब तक धैर्य रखेगा और क्यों रखेगा जब जीवन के आसपास सबकुछ बिखरता हो, खोता हो, मिटता हो और संवेदनाशून्य होता हो। आज के समाज में मध्यम वर्ग में भी वृद्धों के प्रति स्नेह की भावना कम हो गई है। डिजरायली का मार्मिक कथन है कि यौवन एक भूल है, पूर्ण मनुष्यत्व एक संघर्ष और वार्धक्य एक पश्चाताप। वृद्ध जीवन को पश्चाताप का पर्याय न बनने दे।

वृद्धावस्था जीवन का अनिवार्य सत्य है। जो आज युवा है, वह कल बूढ़ा भी होगा ही, लेकिन समस्या की शुरूआत तब होती है, जब युवा पीढ़ी अपने बुजुर्गों को उपेक्षा की निगाह से देखने लगती है और उन्हें अपने बुढ़ापे और अकेलेपन से लड़ने के लिए असहाय छोड़ देती है। आज वृद्धों को अकेलापन, परिवार के सदस्यों द्वारा उपेक्षा, तिरस्कार, कटुक्तियां, घर से निकाले जाने का भय या एक छत की तलाश में इधर-उधर भटकने का गम हरदम सालता रहता। वृद्धों को लेकर जो गंभीर समस्याएं आज पैदा हुई हैं, वह अचानक ही नहीं हुई, बल्कि उपभोक्तावादी संस्कृति तथा महानगरीय अधुनातन बोध के तहत बदलते सामाजिक मूल्यों, नई पीढ़ी की सोच में परिवर्तन आने, महंगाई के बढ़ने और व्यक्ति के अपने बच्चों और पत्नी तक सीमित हो जाने की प्रवृत्ति के कारण बड़े-बूढ़ों के लिए अनेक समस्याएं आ खड़ी हुई हैं। इसीलिये सिसरो ने कामना करते हुए कहा था कि जैसे मैं वृद्धावस्था के कुछ गुणों को अपने अन्दर समाविष्ट रखने वाला युवक को चाहता हूं, उतनी ही प्रसन्नता मुझे युवाकाल के गुणों से युक्त वृद्ध को देखकर भी होती है, जो इस नियम का पालन करता है, शरीर से भले वृद्ध हो जाए, किन्तु दिमाग से कभी वृद्ध नहीं हो सकता। वृद्ध लोगों के लिये यह जरूरी है कि वे वार्धक्य को ओढ़े नहीं, बल्कि जीएं।

बड़े शहरों में परिवार से उपेक्षित होने पर बूढ़े-बुजुर्गों को ह्योल्ड होम्स में शरण मिल भी जाती है, पर छोटे कस्बों और गांवों में तो ठुकराने, तरसाने, सताए जाने पर भी आजीवन घुट-घुट कर जीने की मजबूरी होती है। यद्यपि ह्योल्ड होम्स की स्थिति भी ठीक नहीं है। पहले जहां वृद्धाश्रम में सेवा-भाव प्रधान था, पर आज व्यावसायिकता की चोट में यहां अमीरों को ही प्रवेश मिल पा रहा है। ऐसे में मध्यमवर्गीय परिवार के वृद्धों के लिए जीवन का उत्तरार्द्ध पहाड़ बन जाता है। वर्किंग बहुओं के ताने, बच्चों को टहलाने-घुमाने की जिम्मेदारी की फिक्र में प्रायः जहां पुरुष वृद्धों की सुबह-शाम खप जाती है, वहीं महिला वृद्ध एक नौकरानी से अधिक हैसियत नहीं रखती। यदि परिवार के वृद्ध कष्टपूर्ण जीवन व्यतीत कर रहे हैं, रुग्णावस्था में बिस्तर पर पड़े कराह रहे हैं, भरण-पोषण को तरस रहे हैं तो यह हमारे लिए वास्तव में लज्जा एवं शर्म का विषय है। पर कौन सोचता है, किसे फर्सत है, वृद्धों की फिक्र किसे हैं? भौतिक जिंदगी की भागदौड़ में नई पीढ़ी नए-नए मुकाम ढूंढने में लगी है, आज वृद्धजन अपनो से दूर जिंदगी के अंतिम पड़ाव पर कवीन्द्र-रवीन्द्र की पंक्तियां गुनगुनाने को क्यों विवश है-ह्यदीर्घ जीवन एकटा दीर्घ अभिशाप।, दीर्घ जीवन एक दीर्घ अभिशाप है।

इलेक्टोरल बॉन्ड्सः भाजपा बेनकाब

बंगलुरु के तिलक नगर पुलिस स्टेशन में केन्द्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण के खिलाफ दर्ज एफआईआर ने पूरी भारतीय जनता पार्टी को मुश्किल में डाल दिया है। यह एफआईआर बंगलुरु हाईकोर्ट के निर्देश पर की गयी है। इसके अनुसार सीतारमण एवं अन्य लोगों ने केन्द्रीय जांच एजेंसी प्रवर्तन निदेशालय का डर दिखाकर 8000 करोड़ रुपये से भी ज्यादा की राशि उगाही थी।

जनाधिकार संघर्ष परिषद के सह अध्यक्ष आदर्श अय्यर ने बंगलुरु की जन प्रतिनिधियों की विशेष अदालत में एक शिकायत दर्ज की थी जिसमें उन्होंने आरोप लगाया था कि चुनावी बॉन्ड्स के रूप में जबरन डरा-धमकाकर धन की वसूली की गयी है। एसीएमएम कोर्ट ने शिकायत की एक प्रति रिकॉर्ड के लिये थाने भेजने का भी निर्देश दिया है। एफआरआई के लम्बित होने के कारण सुनवाई 10 अक्टूबर तक के लिये टाली गयी है। शिकायतकर्ता के अनुसार सीतारमण ने ईडी अधिकारियों के माध्यम से जो जबरन वसूली की, उसमें अन्य भारतीय जनता पार्टी के नेताओं का भी सहयोग था। शिकायत में ईडी अधिकारियों तथा केन्द्रीय कार्यालय के अधिकारी तो शामिल हैं ही, कर्नाटक भाजपा के पूर्व सांसद नलिन कुमार कतील, भाजपा अध्यक्ष बीवाई विजयेन्द्र एवं एक और भाजपा नेता शामिल है।

आरोप है कि वित्तमंत्री पद पर बैठी सीतारमण तथा अन्य लोगों ने 8000 करोड़ रुपयों की जबरन वसूली की। विभिन्न कार्पोरेट कम्पनियों के उच्चाधिकारियों को गिरफ्तारी का डर दिखाया गया तथा छापों की धमकी देकर भाजपा के लिये चुनावी बॉन्ड्स खरीदने पर मजबूर किया गया।

उल्लेखनीय है कि इस वर्ष की फरवरी में सुप्रीम कोर्ट ने भाजपा सरकार द्वारा 2019 में लाई गई इलेक्टोरल बॉन्ड्स की योजना को असंवैधानिक बतलाते हुए इसे लोगों के सूचना के अधिकार का हनन भी बताया था क्योंकि भाजपा सरकार उन लोगों के नाम जाहिर करने से इंकार करती रही जिन्होंने उसे इस रूप में चंदा दिया था।

2 अक्टूबर- गांधी जी की अहिंसा और शास्त्री जी के नेतृत्व को नमन

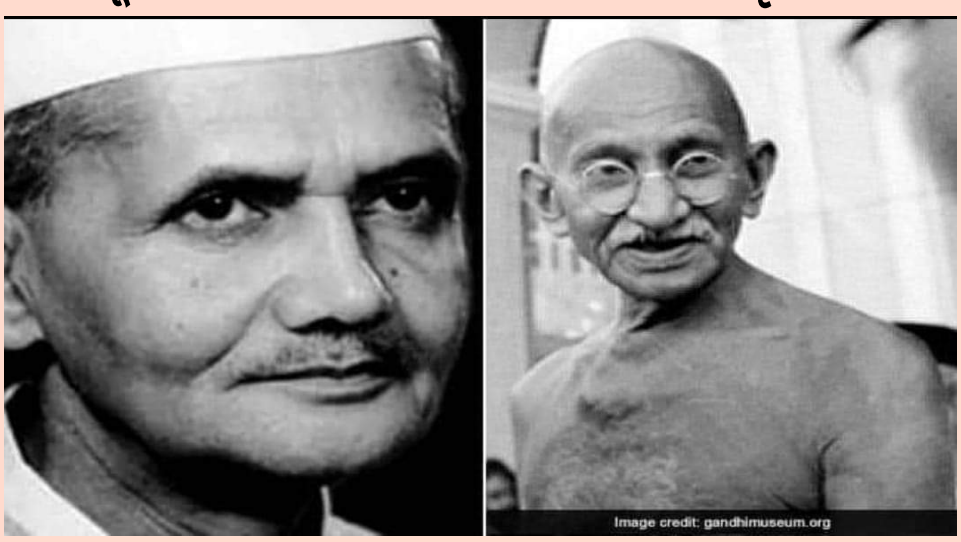

जितेन्द्र त्यागी
दैनिक पुष्पांजलि टुडे

2 अक्टूबर भारत में एक महत्वपूर्ण तिथि है क्योंकि इस दिन *महात्मा गांधी* और *लाल बहादुर शास्त्री* की जयंती मनाई जाती है। यह दिन भारतीय स्वतंत्रता संग्राम और देश की राजनीति में उनके योगदान को सम्मान देने का प्रतीक है। आइए, दोनों महापुरुषों के बारे में कुछ रोचक जानकारियों पर नज़र डालते हैं-

महात्मा गांधी (1869-1948)

1. *पूरा नाम- मोहनदास करमचंद गांधी
2. *जन्म तिथि-2 अक्टूबर 1869, पोरबंदर, गुजरात
3. *उपाधि- महात्मा (महान आत्मा) की उपाधि उन्हें 1914 में दक्षिण अफ्रीका में दी गई थी। उन्हें ÷राष्ट्रपिता÷ भी कहा जाता है।
4. *शांति और अहिंसा- गांधी जी का पूरा जीवन अहिंसा और सत्याग्रह के सिद्धांतों पर आधारित था। उन्होंने ब्रिटिश शासन के खिलाफ अहिंसक प्रतिरोध की अनूठी रणनीति अपनाई।
5. *दांडी मार्च-1930 में, गांधी जी ने नमक कर के खिलाफ 240 मील लंबा पैदल मार्च किया, जिसे *दांडी मार्च* कहा जाता है। यह भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का एक महत्वपूर्ण मोड़ था।
6. *सविनय अवज्ञा आंदोलन- गांधी जी के नेतृत्व में इस आंदोलन ने अंग्रेज़ी कानूनों का शांतिपूर्ण उल्लंघन करते हुए स्वतंत्रता संग्राम को बढ़ावा दिया।
7. *सादा जीवन- गांधी जी का जीवन सरल और स्वावलंबन पर आधारित था। वह अपने लिए कपड़े खुद बुनते थे और चरखा चलाने का महत्व बताते थे।
8. *विश्व शांति के प्रतीक- गांधी जी की अहिंसक विचारधारा ने न केवल भारत, बल्कि पूरे विश्व में प्रेरणा दी। मार्टिन लूथर किंग जूनियर और नेल्सन मंडेला जैसे कई नेताओं ने उनके सिद्धांतों का अनुसरण किया।
9. *पुरस्कार-- हालांकि उन्हें नोबेल शांति पुरस्कार नहीं मिला, लेकिन उनकी विचारधारा के लिए वे हमेशा से एक बड़े सम्मान के पात्र रहे हैं।

लाल बहादुर शास्त्री (1904-1966)

1. *पूरा नाम लाल बहादुर शास्त्री
2. *जन्म तिथि 2 अक्टूबर 1904, मुगलसराय, उत्तर प्रदेश
3. *स्वभाव से सरल शास्त्री जी अपने साधारण स्वभाव और ईमानदारी के लिए जाने जाते थे। उनका आदर्श वाक्य था ÷सादा जीवन, उच्च विचार÷।
4. *जय जवान, जय किसान- उन्होंने 1965 के भारत-पाक युद्ध के दौरान यह नारा दिया, जो भारतीय सेना और किसानों के लिए प्रेरणा बना। यह नारा आज भी भारतीय समाज के मूल्यों को दर्शाता है।
5. *हरित क्रांति- शास्त्री जी ने भारत को खाद्यान्न उत्पादन में आत्मनिर्भर बनाने के लिए हरित क्रांति की शुरुआत की। इससे भारत कृषि क्षेत्र में मजबूत बनकर उभरा।
6. *प्रधानमंत्री के रूप में योगदान- वह 1964 में जवाहरलाल नेहरू के निधन के बाद भारत के दूसरे प्रधानमंत्री बने। उनके कार्यकाल में भारत ने युद्ध और खाद्यान्न संकट के बावजूद प्रगति की।
7. *ताशकंद समझौता- 1965 के युद्ध के बाद भारत और पाकिस्तान के बीच ताशकंद में शांति समझौता हुआ। हालांकि, इस समझौते के कुछ ही समय बाद, 11 जनवरी 1966 को शास्त्री जी का निधन हो गया, जिसकी स्थिति रहस्यमय रही।
8. *सरलता का प्रतीक- शास्त्री जी का जीवन हर भारतीय के लिए प्रेरणा है। उनका आत्म-निर्भरता और देशसेवा पर अटूट विश्वास था।

*गांधी जयंती का महत्व-

2 अक्टूबर को भारत में *राष्ट्रीय अवकाश* के रूप में मनाया जाता है। यह दिन गांधी जी के विचारों, जैसे सत्य, अहिंसा, और स्वराज को याद करने और अपनाने का अवसर है। इस दिन को *अंतर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस* के रूप में भी मनाया जाता है, जिसे 2007 में संयुक्त राष्ट्र महासभा ने मान्यता दी थी।

*गांधी और शास्त्री की संयुक्त जयंती-भारतीय समाज में यह दिन दोनों नेताओं के योगदान को याद करने का विशेष अवसर होता है। स्कूलों, कॉलेजों, और सरकारी कार्यालयों में विशेष कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। साथ ही, विभिन्न समाजसेवी गतिविधियाँ, जैसे स्वच्छता अभियान, अहिंसा पर आधारित कार्यशालाएँ, और प्रेरणादायक भाषणों का आयोजन होता है।2 अक्टूबर का दिन महात्मा गांधी और लाल बहादुर शास्त्री के आदर्शों को अपनाने और भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के संघर्ष को याद करने का दिन है।

पहाड़ों की गोद

पड़ा मुसीबतों से बचपन से वास्ता,
बनाया खुद ही नहीं था रास्ता,
कंटीली झाड़ियों से तन लहूलूहान,
बिना शोर मचाए लिया संज्ञान,
पहाड़ों से बिना टकराए किया पार,
पाई है शांति की संपदा अपार,
नहीं पास रखता संकुचित सोच,
मैं पला हूं पहाड़ों की गोद।
जब लगी प्यास तो मिला जल स्रोत,
बुजुर्गों के ज्ञान से हुआ ओत प्रोत,
मन मस्तिष्क के शिखर से बजी घंटियां,
विचारों के मेल से हुई सहमतियां,
रहते देव यहां भला किसको नुकसान,
पेड़ पौधे जीव जंतु जीते जीवन महान,
कंदराओं में लीन योगी दिव्यता की खोज,
मैं पला हूं पहाड़ों की गोद।
सीमित आवश्यकताएं असीम ज्ञान,
बढ़ते हाथ यहां होता मंगल गान,
जिंदगी की दौड़ धूप कुछ नहीं बिगाड़ती,
स्वच्छ है वायु नहीं बीमारियां प्रताड़ती,
रंग -बिरंगा आसमान अपने रंग बिखेरता,
ऊंची उड़ान भरता पक्षी दिनचर्या समेटता,
कभी मौन रहकर भी पा लेता मौज,
मैं पला हूं पहाड़ों की गोद।
बिना कर्म किए जो पाने की रखे आस,
ऐसे निठल्ले लोगों का होता परिहास,
आनंद उसके अंदर जो प्रकृति से जुड़ा,
न सोचे ऐसा मानव किसी का बुरा,
भोले -भाले लोग भौतिकता से दूर,
नहीं उनके सपने कभी होते चकनाचूर,
नई सुगंध लिए आती सुबह रोज,
मैं पला हूं पहाड़ों की गोद।

- डॉ. विनोद कुमार शर्मा, चंडीगढ़।

ओ! री ; चिरैया

ओ! री चिरैया अपने पंख समेट ।
रुत गरमाई महीना आ गया ज्येष्ठ ।
प्रशंसा भी झूठी, अनुशंसा भी झुठी,
तितली के रंगों की, उपमा अनूठी ।
गले का हार, उंगली में अंगूठी ।
बच-बच बाजों की नजरों से,
मन भावन तेरी वाणी श्रेष्ठ ।
ओ! री चिरैया अपने पंख समेट ।।
तेज चोंच रख, अपने पंजों में जान ।
चीं- चीं बच्चों की, छेड़े मीठी-मीठी तान,
समझे वही जो, कोई हो इंसान ।
मोदी खाने कौए सारे बैठे शैतान ।
प्रोत्साहित कर लूटें, बनते श्रेष्ठ ।।
ओ! री चिरैया अपने पंख समेट ।।
बगुलों की कमी नहीं, भरी तलैया ।
अपनों का अपनों से, जुल्मी रवैया ।
पिंजरे में कैद तोते, बोलें सयाद की जुबान ।
बेबस धरा, बेबस आसमान ।
परजीवी, दूसरों को बताते हैं नेष्ठ ।।
ओ! री चिरैया, चिरैया अपने पंख समेट ।।
फूल पत्ते फुलवारी, सारी की सारी,
तेरे लेखे लगी, पहचान हमारी ।
चलने ना देना, तू सिर पर आरी ।
सदियां दुःख सहती, आई बेचारी ।
भगत शिकारी, बन गया आखेट ।।

आर के भगत
(रविन्द्र कुमार भगत)
मो० 9872313360
सन्नी एन्क्लेव, ग्रेटर मोहाली।

कलेक्टर ने जनसुनवाई में लोगों की सुनी समस्यायें

जनसुनवाई में 87 प्रकरणों की हुई सुनवाई

दैनिक पुष्पांजली टुडे

रीवा। कलेक्ट्रेट में आयोजित जनसुनवाई में कलेक्टर श्रीमती प्रतिभा पाल ने आमजन की समस्यायें सुनीं तथा संबंधित अधिकारियों को कार्यवाही करने के निर्देश दिये। जनसुनवाई के दौरान 87 आवेदकों ने अपनी समस्यायें बताई जिन्हें संबंधित अधिकारियों को समाधानकारक कार्यवाही किये जाने हेतु प्रेषित किया गया। जनसुनवाई के दौरान तमरा गोविंदगढ़ निवासी रामराज कोल ने सौभाग्य योजनान्तर्गत विद्युत कनेक्शन न प्रदाय किये जाने की शिकायत कलेक्टर से की। कलेक्टर ने विद्युत विभाग के अधीक्षण यंत्री को तत्काल मौके पर जाकर वस्तुस्थिति का परीक्षण कर प्रतिवेदन प्रस्तुत करने के निर्देश दिये। उन्होंने रहट हुजून निवासी अरूणेन्द्र पाठक के किसान सम्मान निधि प्रदाय करने, कंचनपुर पनवार के मुन्नालाल के सीमांकन कराने के आवेदनों को संबंधित अधिकारियों को कार्यवाही किये जाने हेतु निर्देशित किया। जवा कल्याणपुर के निवासियों ने श्मशान से अतिक्रमण हटाने का आवेदन दिया जिसे

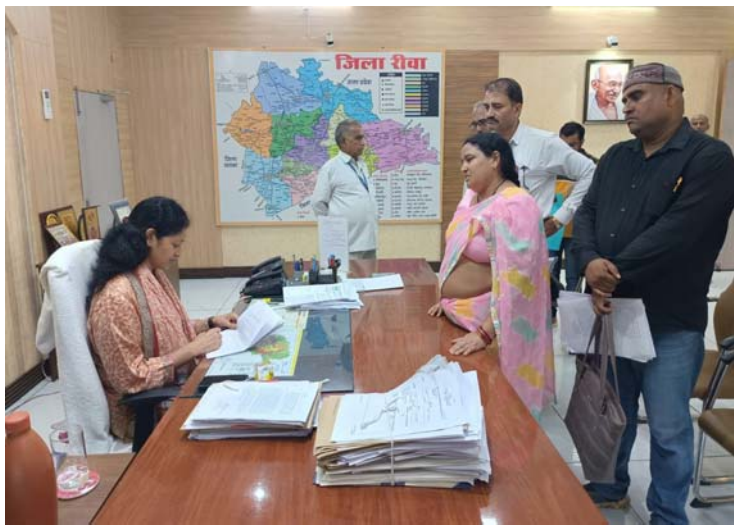

कलेक्टर ने जवा तहसीलदार को कार्यवाही करने के निर्देश दिये। इसी प्रकार जनसुनवाई में रवि चौरसिया खजुहा ने साइकिल प्रदान करने, रिमारी सिरमौर की उर्मिला साकेत ने लाड़ली बहना योजना की अवरूद्ध राशि दिलाने, रामनिवास मिश्रा गुलरिहा ने नहर का मुआवजा दिलाने तथा जरहा के निवासियों ने ग्राम पंचायत में सचिव नियुक्त करने का आवेदन दिया जिन्हें संबंधित अधिकारियों को कार्यवाही किये जाने हेतु प्रेषित किया गया। पिपरवार मनगवां के सौखीलाल सेन के नक्शा में वटांकन करने के आवेदन को तहसीलदार मनगवां को कार्यवाही किये जाने हेतु निर्देशित किया गया। जनसुनवाई के दौरान हरिमणि चतुर्वेदी भनिगवां ने प्रताड़ना के विरूद्ध शिकायत की तथा रामलाल श्रीवास्तव सगरा ने पेंशन कटौती की राशि बैंक से वापस दिलाने का आवेदन दिया जिसे संबंधित अधिकारियों को कार्यवाही करने के लिये प्रेषित कर आवश्यक कार्यवाही किये जाने के निर्देश दिये गये। कलेक्ट्रेट के सभागार में संयुक्त कलेक्टर पी.के. पाण्डेय ने भी जनसुनवाई की।

गांधी जयंती पर शराब की बिक्री रहेगी प्रतिबंधित

दैनिक पुष्पांजली टुडे

रीवा। शासन के निर्देशों के अनुसार गांधी जयंती 2 अक्टूबर 2024 को पूरे रीवा जिले में शराब की बिक्री प्रतिबंधित रहेगी। इस संबंध में कलेक्टर एवं जिला दण्डाधिकारी श्रीमती प्रतिभा पाल ने बताया है कि 2 अक्टूबर को जिले की सभी कंपोजिट शराब दुकानें, वाइन आउटलेट, देशी मदिरा बाटलिंग इकाई चोरहटा तथा देशी एवं विदेशी मदिरा के सभी गोदाम बंद रहेंगे। जिले भर में शराब की बिक्री, खरीद, परिवहन और भण्डारण पर प्रतिबंध के आदेश दिए गए हैं। पुलिस अधीक्षक एवं सहायक आयुक्त आबकारी आदेश का कठोरता से पालन सुनिश्चित कराएं।

स्वदेशी जागरण मंच ने लिया है भारत को स्वभलंबी बनाने का लक्ष्य

महेंद्र शर्मा उपसंपादक पुष्पांजलि टुडे

ग्वालियर। उक्त कार्यक्रम बाबा कोचिंग सेंटर डीडी नगर में संस्था के डायरेक्टर श्री लवकुश तोमर की अध्यक्षता तथा मुख्य वक्ता के रूप में

श्री अरविंद सिंह तोमर विचार विभाग प्रमुख स्वदेशी जागरण मंच ग्वालियर की उपस्थिति में संपन्न हुआ। कार्यक्रम में रोजगार की समस्या का प्रभावी निराकरण उद्यमिता में ही निहित है इस विषय पर विद्यार्थियों को जानकारी दी विद्यार्थियों को यह भी बताया गया की प्रत्येक व्यक्ति को रोजगार प्राप्त होने पर ही देश सशक्त और समृद्ध बन सकता है इसलिए इस दिशा में छात्र-छात्राएं किस प्रकार से जॉब सीकर न बनकर जॉब प्रोवाइडर भी बन सकते हैं । इसके साथ ही अर्न व्हाइल यू लर्न के संबंध में भी चर्चा की गई। संस्था के कई छात्र अपनी पढ़ाई के साथ कुछ कार्य भी कर रहे हैं ऐसे छात्र-छात्राओं को प्रोत्साहित किया गया। तथा स्वदेशी वस्तुओं के उपयोग एवं इसकी आवश्यकता तथा महत्व के बारे में भी बताया गया। हमारा यह कदम देश एवं राष्ट्रहित में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकता है। कार्यक्रम के अन्त में संस्था के डायरेक्टर ने सभी का आभार व्यक्त किया।

वहीं जिले के जे. सी. मिल उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में उद्यमिता प्रोत्साहन सम्मेलन कार्यक्रम का आयोजन किया शिक्षक) द्वारा की गई , साथ ही विद्यालय की शिक्षिका सुनीता जी भी उपस्थित रही ,कार्यक्रम की भूमिका श्री श्यामवीर तोमर जी के द्वारा रखी गई ,कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में श्री लोकेन्द्र सिंह राजपूत (स्वदेशी जागरण मंच ग्वालियर जिले के सह संयोजक) जी उपस्थित रहे , कार्यक्रम का संचालन श्री धर्मेंद्र सिकरवार जी नगर संयोजक हजीरा द्वारा किया गया, विद्यालय के विद्यार्थी द्वारा किए जा रहे स्वरोजगार के लिए सभी विद्यार्थियों के समक्ष सम्मानित किया गया साथ हीं कार्यक्रम में विद्यालय के शिक्षक एवं विद्यार्थी गण उपस्थित रहे।

नवदुर्गा और दशहरा के त्योहार को सद्भावना भाईचारे से मनाए टी आई प्रदीप सोनी

दैनिक पुष्पांजली टुडे संवाददाता मालनपुर

मालनपुर आगामी नवदुर्गा एवं दशहरा के त्यौहार पर शांति व्यवस्था बनाने हेतु थानों में शांति समिति की बैठकें आयोजित की गई मालनपुर थाना प्रभारी निरीक्षक प्रदीप कुमार सोनी ने नगर के गणमान्य नागरिकों के साथ थाना परिसर में शांति समिति की बैठक ली, बैठक में थाना प्रभारी ने गणमान्य लोगों से नगर की सुरक्षा व्यवस्था को लेकर चर्चा की और कहा कि आगामी नवदुर्गा और दशहरा के त्यौहार को आपसी सद्भावना और भाईचारे के साथ मनाएं आप सभी लोग त्योहार पर शांति व्यवस्था बनाए रखें अगर किसी ने त्योहारों की आड़ में शांति व्यवस्था एवं आपसी सद्भावना बिगड़ने की कोशिश की तो कानूनी कार्रवाई की जाएगी, इस बीच उन्होंने कहा कि सोशल मीडिया पर किसी भी जाति समुदाय को लेकर ऐसी कोई भी पोस्ट ना डालें जिससे सामाजिक सद्भावना बिगड़े अगर किसी ने भी कानून व्यवस्था बिगाड़ने की कोशिश की तो कार्रवाई की जाएगी इस बीच उन्होंने नगर के गणमान्य नागरिक व्यापारियों से सुरक्षा व्यवस्था को लेकर सुझाव लिए द्यनगर वासियों ने क्षेत्र में सुरक्षा और ट्रैफिक व्यवस्था सुधारने के लिए थाना प्रभारी का आभार प्रकट किया और प्रशंसा की द्य इस अवसर पर क्षेत्र के धनंजय शर्मा ठेकेदार एवं पूर्व उप सरपंच , बृजेश कुमार किरार स्वच्छता अधिकारी नगर परिषद मालनपुर ,पूरन सिंह प्रजापति, नवाब सिंह जाटव पूर्व जनपद सदस्य , परमाल सिंह तोमर, सचिन शर्मा, सोहब्बत खान, इत्यादि नगर के गणमान्य लोग मौजूद रहे

उप मुख्यमंत्री ने सिविल लाइन पार्क का किया निरीक्षण

शुभारंभ समारोह की तैयारियों का लिया जायजा

दैनिक पुष्पांजली टुडे

रीवा। उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल ने सिविल लाइन पार्क का भ्रमण कर शुभारंभ समारोह की तैयारियों का जायजा लिया तथा आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। उल्लेखनीय है कि पार्क का लोकार्पण तीन अक्टूबर को किया जाएगा।

जिला स्तरीय शांति समिति की बैठक संपन्न

दैनिक पुष्पांजली टुडे

रीवा। कलेक्ट्रेट के मोहन सभागार में जिला स्तरीय शांति समिति की बैठक आयोजित की गई। बैठक में संयुक्त कलेक्टर पीके पाण्डेय, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक अनिल सोनकर, एसडीएम हुजूर वैशाली जैन तथा तहसीलदार हुजूर शिवशंकर शुक्ला उपस्थित रहे। बैठक में कहा गया कि सबके सहयोग और समन्वय से त्यौहारों के लिए समुचित व्यवस्था की जाएगी। चल समारोह और त्यौहारों में नगर निगम साफ-सफाई, प्रकाश तथा पेयजल की व्यवस्था करेगा। चल समारोह और उत्सव की व्यवस्थाओं में आमजनता भी प्रशासन को सहयोग करे। शासन के निर्देशों और सुरक्षा को ध्यान में रखकर त्यौहार मनाएं। शहर में स्थापित होने वाली दुर्गा प्रतिमाओं की ऊंचाई निर्धारित रहे तथा पंडाल में बजाए जाने वाले संगीत/भजन की ध्वनि मानक अनुसार ही रहे। बैठक में अपेक्षा की गई कि दुर्गा पंडाल में स्वयं सेवक भीड़ को नियंत्रित करने व यातायात के अवरोध को दूर करने में सहयोग करेंगे। प्रशासन एवं पुलिस द्वारा ट्रैफिक व्यवस्था को कंट्रोल करने सहित साफ-सफाई, सुरक्षा, प्रकाश आदि की समुचित व्यवस्था की जाएगी। सदस्यों द्वारा सड़क मार्गों को दुरूस्त करने तथा विसर्जन कुण्ड की संख्या बड़ाए जाने के सुझाव पर अधिकारियों ने कहा कि सड़क मार्गों को दुरूस्त करा लिया जाएगा तथा परीक्षण उपरांत कुण्ड की संख्या भी बड़ाई जाएगी। चल समारोह के मार्ग में पुलिस द्वारा सुरक्षा और यातायात के समुचित प्रबंध किए जाएंगे। नगर निगम द्वारा चलित टैंकर के माध्यम से छोटी प्रतिमाओं को विसर्जन की सुविधा दी जाएगी। बड़ी प्रतिमाओं का विसर्जन करहिया घाट में किया जाएगा। विद्युत मण्डल ढीले तारों को ऊँचा कराएं। पूजा पण्डालों में अस्थायी बिजली कनेक्शन देने के साथ उनमें सुरक्षा की पूरी जाँच भी कराएं। बैठक में एडिशनल एसपी अनिल सोनकर ने कहा कि हर वर्ष की तरह सबके सहयोग से चल समारोह और पण्डालों में व्यवस्था सुनिश्चित की जाएगी। एनसीसी ग्राउण्ड में पुलिस द्वारा समुचित सुरक्षा सुनिश्चित की जाएगी। बैठक में शांति समिति के सदस्य तथा विभागीय अधिकारी उपस्थित रहे।

कमिश्नर बीएस जामोद ने विभागीय कार्यों की समीक्षा करते हुए दिए निर्देश

सेवानिवृत्त कर्मचारियों के पेंशन प्रकरण 21 अक्टूबर तक प्रस्तुत करे, अधिकारी क्षेत्र के दौरे में स्कूल और आंगनवाड़ी केन्द्रों का निरीक्षण करे, सड़कों में सुधार का कार्य तत्काल शुरू करे

दैनिक पुष्पांजली टुडे

रीवा। कमिश्नर कार्यालय सभागार में आयोजित बैठक में कमिश्नर बीएस जामोद ने विभागीय कार्यों की समीक्षा की। कमिश्नर ने बैठक में कहा कि सेवानिवृत्त अधिकारियों और कर्मचारियों के लंबित पेंशन प्रकरण 21 अक्टूबर तक अनिवार्य रूप से पेंशन कार्यालय में प्रस्तुत कर दें। विभागीय जाँच के कारण लंबित पेंशन प्रकरणों का भी एक माह में निराकरण कराएं। पेंशन प्रकरण लंबित रहने पर आहरण संवितरण अधिकारी के विरूद्ध अनुशासनात्मक कार्यवाही की जाएगी। सभी अधिकारी क्षेत्र में भ्रमण के दौरान स्कूल और आंगनवाड़ी केन्द्रों का निरीक्षण अवश्य करें। निरीक्षण के दौरान शिक्षकों और विद्यार्थियों की उपस्थिति, मध्यान्ह भोजन के वितरण तथा पठन-पाठन की जानकारी लें। इनमें सुधार के संबंध में उपयोगी सुझाव भी दें।

कमिश्नर ने कहा कि वर्षा के कारण क्षतिग्रस्त सड़कों का संबंधित विभाग तत्काल सुधार कार्य शुरू करें। सीधी-सिंगरौली हाईवे के निर्माण तथा रीवा-शहडोल मार्ग के कार्य को भी तत्काल शुरू कराएं। शासन की विभिन्न योजनाओं से स्वीकृत निर्माण कार्यों को तय समय सीमा में पूरा करें। प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना की सड़कों के सुधार का कार्य एक अक्टूबर से 15 दिसम्बर तक किया जा रहा है। सुधार कार्य में गुणवत्ता का विशेष ध्यान रखें। मुख्य अभियंता पीआईयू सीएम राइज स्कूलों के भवन निर्माण का कार्य तेजी से पूरा कराएं। निर्माण कार्य के लिए वन विभाग की अनुमति अथवा जमीन उपलब्ध न होने के प्रकरण दो दिवस में प्रस्तुत करें। कमिश्नर ने कहा कि आदिमजाति कल्याण विभाग तथा अन्य विभागों द्वारा दी जाने वाली छात्रवृत्ति के पात्र विद्यार्थियों के आवेदन समय पर ऑनलाइन दर्ज करा दें जिससे विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति का लाभ मिल सके। पिछड़ावर्ग एवं अल्पसंख्यक कल्याण विभाग में छात्रवृत्ति भुगतान के तीन हजार से अधिक प्रकरण लंबित हैं। इनका निराकरण कराएं। सीधी जिले में भी 2700 से अधिक आवेदन लंबित हैं। संयुक्त संचालक पशुपालन गौवंश को सड़कों से हटाने के लिए अन्य विभागों के सहयोग से प्रभावी प्रयास करें। इस संबंध में सिंगरौली जिले में अच्छा कार्य हुआ है।

सभी पूर्ण गौशालाओं में भी गौवंश को रखने की व्यवस्था करें। कमिश्नर ने कहा कि अक्टूबर माह में संभाग के सभी जिलों में स्वैच्छिक रक्तदान शिविर लगाए जाएंगे। सभी अधिकारी और कर्मचारी इनमें रक्तदान अवश्य करें। नियमित रूप से रक्तदान करने पर रक्त की गुणवत्ता में सुधार होता है तथा कई गंभीर रोगों का खतरा समाप्त हो जाता है। साथ ही रक्तदान करके हम किसी को नया जीवन देने का पुण्य भी प्राप्त करते हैं। शिक्षा विभाग की समीक्षा करते हुए कमिश्नर ने कहा कि प्राथमिक शिक्षक सप्ताह में एक दिन स्कूल के निकटवर्ती आंगनवाड़ी केन्द्र में जाकर पाँच से छ: साल के बच्चों से संपर्क करें जिससे अगले वर्ष उनका सुगमता से स्कूल में एडमीशन हो सके। पेयजल व्यवस्था की समीक्षा करते हुए कमिश्नर ने कहा कि संभाग के रीवा जिले में सबसे कम वर्षा हुई है। सतना में भी गत वर्ष तथा इस वर्ष औसत से कम वर्षा हुई है। जिन क्षेत्रों में पेयजल कठिनाई की आशंका हो वहाँ के लिए अभी से कार्ययोजना बना लें। कमिश्नर ने कृषि आदान की समीक्षा करते हुए कहा कि कृषि विभाग का मैदानी अमला किसानों को डीएपी के स्थान पर सुपर फास्फेट एवं एनपीके खाद के उपयोग के लिए प्रेरित करे। कलेक्टर हर सप्ताह कृषि आदान की समीक्षा करके रिपोर्ट प्रस्तुत करें। यूरिया खाद की रैक लगातार प्राप्त हो रही हैं। इनका समुचित भण्डारण और वितरण कराएं। जिन केन्द्रों में बड़ी संख्या में किसान खाद लेने आते हैं वहाँ अभी से अतिरिक्त काउंटर की व्यवस्था करा दें जिससे किसान को खाद लेने में परेशानी न हो। सभी जिलों के खनिज अधिकारी खनिज पदार्थों के अवैध उत्खनन तथा परिवहन के विरूद्ध अभियान चलाएं। इनमें लिप्त वाहनों तथा मालिकों के विरूद्ध कड़ी कार्यवाही करें। उचित मूल्य दुकानों से खाद्यान्न वितरण के लिए शत-प्रतिशत खाद्यान्न का उठाव कर समय पर भण्डारण कराएं। मध्यान्ह भोजन योजना, आंगनवाड़ी केन्द्रों तथा छात्रावासों के लिए हर माह समय पर खाद्यान्न उपलब्ध कराएं। बैठक में कमिश्नर ने मुख्य अभियंता विद्युत वितरण कंपनी को बिजली की आपूर्ति में सुधार तथा खराब ट्रांसफार्मर तीन दिवस में बदलने के निर्देश दिए। बैठक में कमिश्नर ने उच्च शिक्षा विभाग, स्कूल शिक्षा विभाग, सामाजिक न्याय विभाग, नागरिक आपूर्ति निगम, लोक निर्माण विभाग, सेतु विकास निगम, मध्यप्रदेश सड़क विकास निगम, महिला एवं बाल विकास विभाग, स्वास्थ्य विभाग, खाद्य विभाग सहित विभिन्न विभागों की योजनाओं की समीक्षा की। बैठक में उपायुक्त दिव्या त्रिपाठी, क्षेत्रीय संचालक उच्च शिक्षा आरपी सिंह, मुख्य अभियंता विद्युत मण्डल आईके त्रिपाठी, क्षेत्रीय संचालक स्वास्थ्य डॉ केएल नामदेव, संयुक्त संचालक सामाजिक न्याय अनिल दुबे, संयुक्त संचालक शिक्षा एसके त्रिपाठी, संयुक्त संचालक महिला एवं बाल विकास ऊषा सिंह सोलंकी, संयुक्त संचालक पशुपालन डॉ राजेश मिश्रा तथा सभी संभागीय अधिकारी उपस्थित रहे।

शाहरुख खान ने

रानी मुखर्जी

की साड़ी का पकड़ा पल्लू, फिर चलने लगे पीछे-पीछे, दिल जीत लेगा वीडियो

इंटरनेशनल इंडियन फिल्म एकेडमी अवॉर्ड्स (IIFA 2024) में शाहरुख खान और रानी मुखर्जी ने महफिल लूट ली. अवॉर्ड सेरेमनी में दोनों को बेस्ट एक्टर और बेस्ट एक्ट्रेस के अवॉर्ड्स से सम्मानित किया गया. इस बीच शाहरुख और रानी मुखर्जी का एक वीडियो सामने आया है, जिसने सभी के दिलों को जीत लिया. फैंस किंग खान की तारीफ करते हुए थक नहीं रहे हैं.आईफा के ऑफिशियल इंस्टा हैंडल पर एक वीडियो शेयर किया गया है. इसमें देखा जा सकता है कि रानी मुखर्जी सी-ग्रीन सिल्क साड़ी में बेहद खूबसूरत लग रही हैं, जिसे उन्होंने मैचिंग ब्लाउज के साथ पेयर किया है. वीडियो में देखा जा सकता है कि रानी मुखर्जी स्टेज पर करण जौहर से गले मिलती हैं और फिर वहां से जाने लगती हैं, तभी शाहरुख खान, एक्ट्रेस की साड़ी का पल्लू पकड़ लेते हैं और उनके पीछे-पीछे चलने लगते हैं, ताकि पल्लू स्टेज के फ्लोर पर टच न हो.

शाहरुख-रानी का वीडियो हुआ वायरल

शाहरुख खान का ये जेस्टर देख रानी मुखर्जी मुस्कुराती हैं और विनर का नाम अनाउंस करने के लिए माइक के पास पहुंचती है. फिर शाहरुख उनकी साड़ी के पल्लू को धीरे से छोड़ देते हैं. इसके बाद रानी मुखर्जी, किंग खान को थैंक्यू कहती हैं. वीडियो में किंग खान चारकोल ग्रे ब्लेजर, ब्लैक शर्ट और ट्राउजर में हैंडसम लग रहे हैं.

सुपरहिट रही है दोनों सितारों की जोड़ी

शाहरुख खान और रानी मुखर्जी की ऑनस्क्रीन केमिस्ट्री काफी पॉपुलर रही है. दोनों सितारे कई फिल्मों में साथ काम कर चुके हैं. इस लिस्ट में 'कभी अलविदा न कहना', 'पहेली', 'चलते चलते', 'कुछ कुछ होता है और 'वीर जारा' जैसी फिल्में शामिल हैं. शाहरुख खान और रानी मुखर्जी के वीडियो पर फैंस ने रिएक्शंस दिए हैं. एक यूजर ने लिखा, 'रानी और शाहरुख साथ में अच्छे लगते हैं'. दूसरे ने कमेंट किया, 'रानी-शाहरुख इंडियन सिनेमा के एवरग्रीन कपल्स में से एक हैं'. वहीं, तीसरे ने लिखा, 'दोनों की केमिस्ट्री का कोई मैच नहीं है'.

शाहरुख खान ने जीता बेस्ट एक्टर का अवॉर्ड

दिलचस्प बात यह है कि शाहरुख खान ने 'जवान' में अपनी शानदार एक्टिंग के लिए बेस्ट एक्टर का (आईफा 2024) अवॉर्ड जीता है. वहीं, रानी मुखर्जी ने 'मिसेज चटर्जी वर्सेस नॉर्वे' में अपनी सशक्त भूमिका के लिए बेस्ट एक्ट्रेस का अवॉर्ड अपने नाम किया. दोनों सितारों को उनके प्रभावशाली काम के लिए सराहा गया.

18 साल बाद फिर से लोगों को हंसाने आ रही है 'खोसला का घोसला', इस दिन होगी री-रिलीज

आजकल फिल्म इंडस्ट्री में पुरानी फिल्मों को री-रिलीज करने का ट्रेंड जोरों पर है. पहले भी 'लैला मजनू', 'वीर जारा', 'रहना है तेरे दिल में' और 'जोश' जैसी कई फिल्में थिएटर्स में री-रिलीज की जा चुकी हैं. इस लिस्ट में अब अनुपम खेर की कल्ट क्लासिक फिल्म 'खोसला का घोसला' का नाम भी शामिल हो चुका है. दिबाकर बनर्जी के डायरेक्शन में बनी ये फिल्म एक बार फिर बड़े पर्दे पर आने के लिए तैयार है.साल 2006 में रिलीज हुई 'खोसला का घोसला' ठीक 18 साल बाद बड़े पर्दे पर लौटने वाली है और इस खबर के बाद से ही फिल्म के फैन्स काफी एक्साइटेड हो गए हैं. अनुपम खेर और बोमन ईरानी की मुख्य किरदारों वाली ये फिल्म अब अक्टूबर में सिनेमाघरों में वापसी करने वाली है.

इस दिन री-रिलीज होगी 'खोसला का घोसला'

'खोसला का घोसला' एक कॉमेडी फिल्म है. इस फिल्म ने पिछले कुछ सालों में इंडस्ट्री में बनी सबसे बेहतरीन कॉमेडी फिल्मों की लिस्ट में अपना नाम शामिल किया है. ये फिल्म 22 सितंबर 2006 को रिलीज हुई थी और अब फिल्म 18 अक्तूबर को बड़े पर्दे पर आने के लिए बिल्कुल तैयार है. फिल्म ने 54वें नेशनल फिल्म अवॉर्ड में बेस्ट फीचर फिल्म का अवॉर्ड भी जीता था.

क्या है फिल्म की कहानी ?

'खोसला का घोसला' की कहानी जयदीप साहनी ने लिखी थी, जो दो पीढ़ियों के बीच फर्क को दिखाती है. फिल्म में एक मिडिल क्लास फैमिली के शख्स कमल किशोर खोसला (अनुपम खेर) की कहानी दिखाई गई है, जिसकी जमीन पर एक ठग किशन खुराना (बोमन ईरानी) कब्जा कर लेता है. खोसला का बेटा चेरी (परवीन डबास) अपने दोस्तों के साथ मिलकर उस ठग को कैसे बेवकूफ बनाकर अपने पापा की जमीन वापस दिलाता है, वो इस फिल्म कॉमेडी के जरिए में दिखाया गया है.

इतना था फिल्म का बजट

अनुपम खेर की फिल्म 'खोसला का घोसला' को लोगों से काफी प्यार मिला था. हालांकि, ये बॉक्स ऑफिस पर अच्छी कमाई नहीं कर पाई थी.

ना कोई आइडिया और ना ही कहानी, Fake News निकली धूम 4 में रणबीर कपूर की एंट्री की बात!

यशराज बैनर की फिल्म धूम के चौथे पार्ट का लंबे वक्त से इंतज़ार किया जा रहा है. यही वजह है कि फिल्म से जुड़ी जब भी कोई खबर आती है तो इस फ्रेंचाइजी के फैंस एक्साइटेड हो जाते हैं. ऐसा ही कुछ हुआ शनिवार 28 सितंबर को. बीते रोज़ एक रिपोर्ट में बताया गया कि 'धूम 4' पर काम शुरू हो गया है और मेकर्स ने लीड रोल के लिए इसमें रणबीर कपूर को फाइनल कर लिया है. पर अब ऐसा लगता है कि फैन्स की इन खुशियों की उम्र महज़ एक ही दिन थी क्योंकि अब एक लेटेस्ट रिपोर्ट में 'धूम 4' और रणबीर के इसमें काम करने वाली खबरों को फेक न्यूज़ बताया गया है.धूम सीरीज़ 90 के दशक में पैदा हुए नौजवानों के लिए बेहद खास फिल्म है. इसका पहला पार्ट 2004 में आया था. उस वक्त जॉन अब्राहम फिल्म में विलेन बने थे. अभिषेक बच्चन और उदय चोपड़ा विलेन को पकड़ने की कोशिश करते दिखाई दिए थे. फिल्म कामयाब रही थी. इसके बाद 2006 में ऋतिक रोशन के साथ धूम 2 बनाई गई और फिर 2013 में आमिर खान के साथ धूम 3. इन तीनों ही फिल्मों में चोर पुलिस की कहानी दिखाई गई थी. अभिषेक और उदय तीनों ही फिल्मों में चोर के पीछे दिखाई दिए.

रणबीर की एंट्री वाली खबर है गलत ?

जूम ने अपनी एक रिपोर्ट में बताया है कि धूम 4 और रणबीर को लेकर आई रिपोर्ट फेक है. जूम ने रिपोर्ट में दावा किया कि उन्होंने आदित्य चोपड़ा के बेहद करीबी शख्स से इस बारे में बात की है. उस शख्स ने तमाम रिपोर्ट को खारिज कर दिया. आदित्य के करीबी शख्स ने कहा, धूम 4 को लेकर अभी कोई बात ही नहीं हो रही है, ये बात तो छोड़ ही दीजिए कि इसमें स्टार कौन होगा. जब तक कोई अच्छी स्टोरी नहीं मिलती, आदित्य धूम 4 को लेकर कोई जल्दबाजी नहीं करना चाहते हैं. स्क्रीनप्ले की बात तो छोड़िए धूम को लेकर कोई आइडिया तक नहीं है अभी. रिपोर्ट में बताया गया है कि जब भी ये फिल्म बनेगी ये ओरिजिनल कास्ट के साथ ही बनाई जाएगी.

रणबीर के करीबी ने क्या कहा ?

रिपोर्ट में बताया गया है कि रणबीर कपूर के करीबी दोस्त ने भी इन अफवाहों को खारिज कर दिया है. दोस्त का कहना है, वो किसी दूसरे की फ्रेंचाइज में कभी काम नहीं करेगा. धूम रणबीर की है ही नहीं.

दरअसल पिंकविला की रिपोर्ट में दावा किया गया था कि धूम 4 का काम प्री-प्रोडक्शन स्टेज पर पहंच गया है. इसके काम पर आदित्य चोपड़ा नज़र बनाए हुए हैं. रिपोर्ट में कहा गया था कि आदित्य चोपड़ा विजय कृष्ण आचार्य के साथ मिलकर स्क्रिप्ट तैयार कर रहे हैं. साथ ही ये भी बताया गया था कि रणबीर कपूर ने फिल्म करने के लिए हां कर दी है.

सोनाक्षी सिन्हा

को सबसे पहले हुआ था प्यार का अहसास, 7 साल तक क्यों सबसे छुपाकर रखा रिश्ता? एक्ट्रेस ने बताई वजह

सोनाक्षी सिन्हा और जहीर इकबाल बॉलीवुड के मोस्ट पॉपुलर कपल ने 23 जून, 2024 को शादी की थी. इंटीमेट शादी के बाद कपल ने ग्रैंड रिसेप्शन पार्टी दी थी. पार्टी में सलमान खान, रेखा और काजोल सहित कई सेलेब्स ने शिरकत की थी. दोनों ने सात साल तक अपना रिश्ते को छुपाकर रखा था. हाल ही में सीएनएन-न्यूज 18 के साथ एक इंटरव्यू में कपल ने इसकी वजह का खुलासा किया है. सोनाक्षी ने अपने जवाब में कहा कि 'नजर की वजह से' रिश्ता छुपाकर रखा. सोनाक्षी ने आगे कहा, 'हम अनावश्य रूप से लोगों का ध्यान नहीं खींचना चाहते थे. पर्सनल चीजों को पर्सनल रखना चाहिए. यह हमेशा ठीक रहता है. आप पहले से ही लाइमलाइट में हैं. हर कोई आपके बारे में जानने को बेताब है. ऐसे में जो चीज़ आपको बहुत प्यारी है उसे अपने तक ही रखना चाहिए. 'सोनाक्षी सिन्हा ने यह भी कहा कि रिश्ते को छुपाए रखने के लिए कोई स्ट्रैटजी नहीं बनाई थी. हम स्वाभाविक रूप से मिले, हमें प्यार हो गया. हम डेट पर जाने लगे. मुझे बहुत जल्द ही अहसास हो गया था कि ये रिश्ता परमानेंट है. हालांकि, जहीर को यह अहसास बाद में हुआ. समय के साथ, जहीर की भी फीलिंग बढ़ती गईं. अंत में वह इस नतीजे पर पहुंचे कि वह अपनी जिंदगी सिर्फ सोनाक्षी के नाम करेंगे.

सोनाक्षी सिन्हा और जहीर इकबाल की मुलाकात एक पार्टी में हुई थी. यह पार्टी सलमान खान ने होस्ट की थी. सोनाक्षी ने बॉलीवुड में अपना डेब्यू सलमान खान की फिल्म दबंग के साथ किया था. जहीर ने 2019 में सलमान खान के प्रोडक्शन की फिल्म 'नोटबुक' से बॉलीवुड में एंट्री ली थी.एक हफ्ते पहले ही सोनाक्षी ने कहा था कि शादी के बाद खाना बनाने में प्रेशर फील नहीं करती.

नारी के लिए साज-श्रृंगार भी जरूरी

पति-पत्नी का रिश्ता वफादारी तथा देखभाल के अलावा और भी बहुत कुछ मांगता है जिसके लिए आपको आकर्षक और सुंदर सलोना दिखना ही चाहिए।

विवाह जीवन का सबसे खूबसूरत मोड़ है लेकिन यह भी आश्चर्यजनक सत्य है कि अक्सर इसके बाद पित्नयां अपने सौंदर्य और आकर्षण की उपेक्षा करने लगती हैं। विवाह के समय वधू के हाथों में लगने वाली हल्दी मानो वधू का पीछा ही नहीं छोड़ती और रसोईघर में मसालों की गंध में लिपटी पत्नी के प्रति पति का आकर्षण धीरे-धीरे कम होने लगता है।

यही वह समय है जब पत्नियों को जीवन का यह शाश्वत सत्य समझ लेना चाहिए कि अगर उन्हें बेतरतीब, बढ़ी दाढ़ी और अस्त-व्यस्त कुर्ते-पायजामा में अखबार में चिपके पतिदेव पर खीज होती है तो उनका भी आपके बिखरे बाल, मुड़ी-तुड़ी साड़ी और मसाले-पसीने से महकती देह से मुंह मोड़ लेना नितांत स्वाभाविक है।

पति-पत्नी का रिश्ता वफादारी तथा देखभाल के अलावा और भी बहुत कुछ मांगता है जिसके लिए आपको आकर्षक और सुंदर-सलोना दिखना ही चाहिए। थोड़ी-सी शोखियां और थोड़ी-सी शरारतें आपके वैवाहिक जीवन को स्थायी रूप से मधुमास बना देंगी।

इस दिशा में शुरूआत करने से पहले एक बड़ी ही महत्वपूर्ण बात को गांठ बांध लें कि जीवन साथी को प्रसन्न करने में न तो कोई बुराई है और न ही यह अहं का सवाल है। अगर शादी के बाद आपकी खुशी के लिए वह अपनी प्यारी मूंछों की कुर्बानी दे सकते हैं, आपकी प्रसन्नता के लिए मनपसंद नीली शेड को त्याग कर भूरे और काले शेड के परिधान पहन सकते हैं तो उनकी खुशी के लिए थोड़ा-सा स्लिम होकर कभी-कभी उनके मनपसंद आउटफिट को क्यों नही पहन सकतीं।

- सुगन्ध सभी को आकर्षित करती है इसलिए अंतरंग क्षणों में किसी बढ़िया परफ्यूम अथवा इत्र का प्रयोग अवश्य करें। सुबह उनके ऑफिस निकलने से पहले उसी सुगंध में डूबा एक शरारती-सा नोट लिख कर ब्रीफकेस में रख दें। फिर देखिए, उनकी शाम के साढ़े पांच सीधे पर की देहरी पर ही बजेंगे।

- ढीले-ढाले कपड़े पहनने में अच्छे रहते हैं लेकिन आपके वार्डरोब में चटख रंग और लेटैस्ट फैशन के टाइट्स और हाई हील प्लेटफार्म भी होने ही चाहिएं।
- आपकी बदली पसंद केवल पोशाक में ही नहीं, अंतर्वस्त्रों के मामले में भी दिखनी चाहिए जिसका मूलमंत्र है 'जितना आधुनिक, उतना आकर्षक'। पतिदेव को फैशन परेड और फिल्मी मैगजीन घूरने पर क्यों टोकती हैं? हीरोइनों और मॉडलों को तो केवल देखा भर जा सकता है लेकिन असली रानी तो आप हैं। मेकअप केवल मॉडलों के लिए ही नहीं है आप भी उसमें उतनी ही अच्छी लगेंगी।
- कौन कहता है कि आपकी शादी हुए पांच साल हो जाने का मतलब केवल चूल्हा-चौका और परिवार तथा नौकरी की व्यवस्था है। घर-कार्यालय की उलझनों में से थोड़ा समय निकालिए और पतिदेव को मनाकर निकल पड़िए। सनसनीखेज सप्ताहांतों के लिए जरूरी नहीं कि आपका यह 'मिनी हनीमून' किसी हिल स्टेशन अथवा रिसोर्ट में ही मनाया जाए। इसकी पहली और आखिरी शर्त है प्राइवेसी।
- भरी भीड़ में चुपके से पतिदेव को छेड़ देने की शरारत खूब कामयाब रहती है। जरा सोच कर तो देखिए कि वह रैस्टोरैंट में भोजन का आर्डर दे रहे हों और आप कपड़े से ढकी मेज के नीचे अपने पैरों से धीरे-धीरे उनके पैरों पर गुदगुदी कर दें। यकीनन वेटर को वह कुछ की जगह कुछ आर्डर दे जाएंगे।

और खाने के बाद मीठा, ऐसी शरारत करने से पहले घर के फ्रिज में खीर ठंडी करने को रख दीजिए। इन शोखियों के बाद अब भला रैस्टोरैंट में ठहरने का समय किसके पास होगा।

कर्ड सैंडविच

सामग्री : 1 कप दही, 6 स्लाइस ब्रैड, 1 कप बारीक लम्बाई में कटी हुई पत्तागोभी, शिमला मिर्च और गाजर, आधा टीस्पून अदरक का पेस्ट, 3-8 हरी मिर्च बारीक कटी हुई, नमक स्वादानुसार, छौंक के लिए थोड़ी-सी राई और तेल।

विधि : दही को छलनी में डालकर एक तरफ रख दें, दही का पानी निकलते ही सभी सब्जियां, अदरक, हरी मिर्च और नमक मिला लें। हरी धनिया बारीक काटकर मिला लें। तवे पर 2 टीस्पून तेल डालें। राई डालकर चटकने दें। दही का मिश्रण दो ब्रैड के बीच भरकर तवे पर रख दें और क्रिस्पी होने तक सेंक लें। सॉस या चटनी के साथ सर्व करें।

शिशु के सौंदर्य का रखें ख्याल

सौंदर्य और सुंदर त्वचा पर मात्र युवा वर्ग का ही अधिकार नहीं है बल्कि इस पर बाल वर्ग का भी उतना ही अधिकार है जितना कि युवा वर्ग का। जन्म के समय नवजात शिशु की त्वचा एवं शरीर बेहद कोमल, नर्म और बेदाग होता है किन्तु समय के साथ-साथ त्वचा की सुरक्षा में बरती गई छोटी-सी असावधानी काफी सीमा तक खतरनाक सिद्ध होती है।

शिशु को जन्म के उपरांत कई प्रकार के वातावरण का सामना करना पड़ता है। कई माता-पिता अपने शिशु के स्वास्थ्य और सौंदर्य के प्रति लापरवाह होते हैं तो कई इतने जागरूक होते हैं कि उनकी शिशु के प्रति अधिक जागरूकता और आवश्यकता से अधिक देखरेख भी शिशु के स्वास्थ्य और त्वचा को हानि पहुंचाती है, जैसे कि मां द्वारा शिशु को दिन में कई-कई बार साबुन से नहलाना, अपने क्रीम-पाऊडर का उसकी त्वचा पर प्रयोग करना आदि। ऐसे कई कारण हैं जिसके कारण शिशु की त्वचा खराब हो जाती है और संक्रमित होकर अनेक रोगों एवं समस्याओं को निमंत्रण दे देती है- जैसे कि एलर्जी, त्वचा का फटना, फोड़े-फुंसी आदि। यदि आप अपने शिशु को स्वस्थ और सुंदर रखना चाहती हैं तो कृपया निम्न सावधनियों का पालन अवश्य करें:

शिशु की त्वचा संबंधी कुछ सावधानियां

- शिशु की त्वचा पर क्रीम और कॉस्मैटिक का प्रयोग नहीं करना चाहिए।
- शिशु की त्वचा यदि शुष्क हो तो माइश्चराइजर के स्थान पर जॉनसन बेबी ऑयल या बादाम अथवा जैतून का तेल प्रयोग करना चाहिए।
- सप्ताह में एक या दो बार बेसन में दूध मिला कर उस पेस्ट को बच्चे के शरीर पर हल्के हाथों से मलना चाहिए, इस प्रयोग से त्वचा के भीतर तक की सफाई हो जाती है।
- शिशु की त्वचा पर साबुन का प्रयोग अधिर नहीं करना चाहिए, इससे शिशु की त्वचा क्षारीय बन जाती है और बैक्टीरिया भी सक्रिय होकर बच्चे की त्वचा को हानि पहुंचा सकते हैं।
- शिशु के शरीर पर नियमित जैतून के तेल की मसाज करनी चाहिए, इससे बच्चे की मांसपेशियां मजबूत होती हैं।

ऑफिस में सेंस ऑफ ह्यूमर

जरा सोचिए हंसी के बिना हमारी लाइफ कितनी बोरिंग होती। सुबह ट्रैफिक की रेलमपेल झेलते हुए जब हम ऑफिस पहुंचते हैं तो वहां भी कई तरह की परेशानियां पहले से ही हमारे स्वागत के लिए तैयार खडी होती हैं। समझ नहीं आता कि इतने कम समय में ढेर सारा काम कैसे पूरा किया जाए। ऐसे में आपका एक कलीग अचानक कोई ऐसी बात कहता है कि आप सब एक साथ हंस पडते हैं। मिनटों में आपका सारा तनाव छूमंतर हो जाता है और थोडी ही देर में आप पूरी ऊर्जा के साथ अपने काम में जुट जाते हैं।

मुश्किल से मिलता है मौका

रोने के हजारों बहाने सभी के पास होते हैं, पर हंसने का मौका हमें बडी मुश्किल से मिलता है। खास तौर से ऑफिस के आपा धापी और अनुशासन भरे माहौल में अगर कभी कोई हंसने वाली बात हो तो हमें उसका लुत्फउठाने से चूकना नहीं चाहिए। एक विज्ञापन एजेंसी में कार्यरत मुग्धा घोष बताती हैं, एक रोज कुछ ऐसा संयोग हुआ कि ऑफिस की एक पार्टी में मैं और मेरी एक कलीग दोनों बिलकुल एक जैसी ड्रेस पहन कर आ गए। हमें साथ देख कर सब हंस पडे। हंसी के इस पल को हमने भी खूब एंज्वॉय किया।

अचूक औषधि है हंसी

मनोवैज्ञानिक सलाहकार डॉ. अशुम गुप्ता कहती हैं, आजकल कई मल्टीनेशनल कंपनियां अपने कर्मचारियों को तनावमुक्त करने के लिए कुछ महीनों के अंतराल पर उनके लिए पिकनिक या पार्टियों आयोजन करती हैं, ताकि लोग अपने सहकर्मियों के साथ हलके-फुलके माहौल में बातचीत करके एक-दूसरे को बेहतर ढंग से समझ सकें। कुछ ऐसे क्षेत्र हैं जहां का माहौल बहुत तनावपूर्ण होता है। जैसे-आर्मी, पुलिस, मेडिकल प्रोफेशन आदि। यहां काम करने वाले लोगों के लिए यह बहुत जरूरी है कि वे अपने लिए हंसी-खुशी के कुछ पल ढूंढ कर खुद को तनावमुक्त रखने की कोशिश करें। इसी वजह से आजकल ऐसे महकमों में योग, काउंसलिंग और लाफ्टर थेरेपी से संबंधित कई वर्कशॉप आयोजित किए जाते हैं।

हंसें, पर जरा संभलकर

- काम के बीच में दो-चार मिनट के लिए हंसी-मजाक करना तो ठीक है, लेकिन यह सेशन ज्यादा लंबा नहीं चलना चाहिए।
- अच्छे सेंस ऑफ ह्यूमर की निशानी यही है कि आप केवल दूसरों पर नहीं, बल्कि खुद पर भी हंसना सीखें।
- इस बात का हमेशा ध्यान रखें कि आपकी बातों से किसी की भावनाएं आहत न हों।
- कुछ लोग छोटी-छोटी बातों का बहुत जल्दी बुरा मान जाते हैं। ऐसे लोगों पर किसी भी तरह की टीका-टिप्पणी करने से बचें।
- हर ऑफिस में पुरुषों के साथ स्त्रियां भी काम करती हैं। इसलिए सभी को इस बात का हमेशा ध्यान रखना चाहिए कि मजाक में कोई ऐसी बात न कही जाए, जिससे दूसरा व्यक्ति असहज महसूस करे।
- एसएमएस या ईमेल के जरिये एक-दूसरे को जोक्स भेजते समय शालीनता की सीमाओं का हमेशा खयाल रखें।
- जिन लोगों का सेंस ऑफ ह्यूमर अच्छा होता है, ऐसे लोग कभी-कभी अनजाने में दूसरों को डिस्टर्ब कर रहे होते हैं। इसलिए हमें अपने सेंस ऑफ ह्यूमर का सही मौके पर इस्तेमाल करना चाहिए। इसके लिए ऑफिस का कैफेटेरिया सबसे अच्छी जगह है। जहां आप अपने साथियों के साथ दिल खोल कर हंस सकते हैं।
- अगर आपको कोई अच्छा सा जोक याद आ रहा है, तो फिर देर किस बात की उसे अपने साथियों के साथ शेयर कीजिए और तनाव को भूल जाइए।

अब डैंड्रफ रहे काबू में

बारिश के मौसम में उमस और पसीने से बालों में चिपचिपाहट हो जाती है। रूसी एक प्रकार की निर्जीव त्वचा है, जो बालों की जडों के आसपास जमा हो जाती है। इसलिए अपने बालों को साफ रखें और महीन दांतों वाली कंघी का प्रयोग करें। ताकि सिर की त्वचा से आसानी से रूसी बाहर निकल जाए। यहां हेयर एक्सपर्ट जावेद हबीब बता रहे हैं, उपयोगी टिप्स।

- बालों में प्रतिदिन ब्रश करने और मालिश करने से डैंड्रफकी समस्या से छुटकारा मिल सकता है, क्योंकि इन उपचारों से रक्तसंचार तीव्र गति से होता है और मृत त्वचा निकल जाती है।
- गर्म ऑलिव ऑयल में कुछ बूंदें अदरक के रस की डालकर इससे सिर पर कुछ देर मालिश करें। आधे घंटे तक बालों में लगा रहने के बाद शैंपू कर लें।
- बालों में रूसी होने से बाल कमजोर होकर टूटने लगते हैं। ऐसे में प्याज का रस लगाएं। आधा घंटे बाद एक मग में नीबू की कुछ बूंदें डाल कर उस पानी से धोएं।
- नीम की पत्तियों का रस नीबू के रस में मिलाकर सिर में लगभग तीस मिनट तक लगाएं। फिर शैंपू कर लें या फिर शैंपू करने के बाद सिरके और नीबू का रस बराबर मात्रा में लेकर 5-10 मिनट तक के लिए सिर में लगा रहने दें। उसके बाद बालों को धो लें।
- जोजोबा ऑयल और कोकोनट ऑयल को मिलाकर उंगली के पोरों से धीरे-धीरे सिर की त्वचा पर मालिश करें। इसके बाद गर्म पानी में भीगे तौलिये को निचोडकर थोडी देर तक सिर पर लपेटकर रखें। आधे घंटे बाद शैंपू करें।

खूबसूरत बाल हर पल साथ

जब हम चाहते हैं कि किसी खास उत्सव पर हमारे बाल बेहद अच्छे दिखें तो जाने-अनजाने कोई ऐसी गडबड हो ही जाती है, जिससे पूरे दिन हम परेशान रहते हैं। अगर आपके साथ भी ऐसा ही होता है तो हेयर एक्सपर्ट जावेद हबीब के कुछ आसान टिप्स अपनाकर आप पार्टी की शान बन सकती हैं।

● स्मार्ट हेयर कट

बालों का कट ऐसा होना चाहिए जो आपके चेहरे पर सूट करे और आपकी जीवनशैली के अनुकूल हो। इसके अलावा नियमित रूप से बालों की ट्रिमिंग कराएं। ऐसा हेयरस्टाइल बनाएं, जिसे संभालना आपके लिए आसान और संभव हो।

● जरूरी है हेयर एक्सेसरीज

बालों को संवारने के लिए खुद पर सूट करने वाली हेयर एक्सेसरीज का संग्रह करें। मौके की नजाकत को ध्यान में रख कर आप इन एक्सेसरीज का प्रयोग करके स्टाइलिश दिख सकती हैं।

● सही हेयर प्रोडक्ट का करें चयन

बालों के लिए जो भी प्रोडक्ट इस्तेमाल करें वे आपके बालों की किस्म के अनुरूप होने के साथ ही बेहतरीन क्वॉलिटी के होने चाहिए। जहां तक हो हेयर स्टाइलिंग प्रोडक्ट के अधिक प्रयोग से बचें। रूखे बालों के लिए कंडिशनर युक्त शैंपू का इस्तेमाल करें। तैलीय बालों के लिए सिट्रस युक्त शैंपू और अन्य हेयर प्रोडक्ट इस्तेमाल करें ताकि आपके बालों की अतिरिक्त चिपचिपाहट दूर हो जाए। रूखे बालों पर हॉट हेयर रोलर, हॉट एयर ड्रायर, पर्म या ब्लीच का प्रयोग न करें।

● सिर का मसाज

हफ्ते में एक-दो बार गुनगुने ऑलिव ऑयल या आमंड ऑयल से सिर की त्वचा की मालिश से बालों को पोषण मिलता है। साथ ही रूखे बालों को जरूरी मॉयस्चर भी मिल जाता है। इसके बाद बालों को अच्छे नरिशिंग शैंपू से धो लें।

ब्रेड इडली

सामग्री : 6 ब्रेड स्लाइस, 2 उबले हुए आलू, 1 टी स्पून हरी मिर्च (बारीक कटी), 1 टीस्पून धनिया पाउडर, 1 टे.स्पून हरा धनिया (बारीक कटा), 1 टी स्पून (जीरा, उड़द की दाल, राई या सरसों), 1 कप दही, 2 टे.स्पून तेल, नमक स्वादानुसार।

विधि : उबले हुए आलू को छीलकर मैश कर लें। अब इसमें बारीक कटी हरी मिर्च, नमक, धनिया पाउडर और हरा धनिया डालकर अच्छी तरह मिला लें। दही को हल्का सा फेंट लें।

एक पैन में आधा टी स्पून तेल गरम करके उसमें जीरा, सरसों के दाने और उड़द की दाल डालकर चटकने दें। अब इस छौंक को फेंटी हुई दही में डाल दें।

ब्रेड को कटोरी या गिलास की सहायता से गोलाकार में काट लें। ब्रेड की एक तरफआलू का मिश्रण लगा दें।

एक पैन में तेल गरम करें और उसमें आलू लगी तरफसे ब्रेड को डाल दें। ब्रेड की दूसरे हिस्से पर 2 चम्मच दही का मिश्रण डालकर फैला दें। और फ्राइंग पैन को 2 मिनट के लिए ढक्कन से ढक दें। लीजिए तैयार है गर्मागर्म ब्रेड इडली इसे तुरंत सर्व करें।

खरगोन जिला मुख्यालय पर स्वामी विवेकानंद सभा ग्रह में जीवन ज्योति संकुल स्तरीय संघ का आयोजन रखा गया

खरगोन जिले से मुन्ना खान ब्यूरो चीफ पुष्पांजलि टुडे

कार्यक्रम में जिला परियोजना प्रबंधक मंडलोई

एवं जिला स्टाफ से किरण कटारे ब्लाक प्रबंधक धर्मेन्द्र दुबे ने संगठन की महिलाओं को विस्तार से समझाया गया आज जीवन ज्योति संकुल स्तरीय संघ की आम सभा का आयोजन रखा गया जिसमें 40 ग्राम संगठन के पदाधिकारी और चार सौ समूह के पदाधिकारी उपस्थित हुए है कार्यक्रम में संकुल के पदाधिकारी एवं जिला पंचायत से जिला परियोजना प्रबंधक मंडलोई जिला स्टाफ से किरण कटाने रुपेश सोहनी ,शिवकन्या सिसोदिया ब्लॉक प्रबंधक धर्मेंद्र दुबे,ब्लॉक टीम मेंस असद शेख स,दीपिका जोशी,अरुण खोदरिया जनप्रतिनिधि जनपद अध्यक्ष प्रतिनिधी गजानंद पटल्या एवं लोनार ग्राम के सरपंच प्रतिनिधि अनोखीलाल मंडलोई , जनपद सदस्य श्रीराम उपस्थित हुए कार्यक्रम स्वामी विवेकानंद भवन में हुआ संपन्न हुआ है कार्यक्रम में बड़ी संख्या में महिलाएं उपस्थित हुए

पूरन सिंह प्रजापति के भिण्ड के जिलाध्यक्ष बनने प्रजापति समाज ने दी बधाईयां

दैनिक पुष्पांजली टुडे

भिण्ड। समाजसेवी पूरन सिंह प्रजापति के अखिल भारतीय प्रजापति संघ जिला भिण्ड के जिलाध्यक्ष बनने पर प्रजापति समाज के लोगों ने प्रसन्नता व्यक्त करते उन्हें बधाईयां दी है।अखिल भारतीय प्रजापति कुंभकार महासंघ के पूर्व अतिरिक्त प्रदेश अध्यक्ष एवं न्यास का महामंत्री एडवोकेट जवाहर प्रजापति, भारतीय प्रजापति महासभा के वरिष्ठ राष्ट्रीय उपाध्यक्ष डॉ. रामबिहारी प्रजापति, युवा शाखा के पूर्व जिला अध्यक्ष श्री होतम सिंह प्रजापति,पुत्तू सिंह प्रजापति,डॉ. कमल प्रजापति,डॉ. कल्याण

प्रजापति गोरमी,दिनेश प्रजापति मुरैना,बलवंत प्रजापति, सटोलाराम प्रजापति, श्री ओमप्रकाश प्रजापति,श्री रामबाबू प्रजापति, फूलसिंह प्रजापति,राजू प्रजापति, दौलतराम प्रजापति,अशोक प्रजापति भिण्ड,रघुराई प्रजापति पूर्व भिण्ड अध्यक्ष,दीवान सिंह प्रजापति, रामसेवक प्रजापति,भगवान दास प्रजापति,कैलाश भगत जी, सुरेश प्रजापति मालनपुर,देवीदयाल प्रजापति,कैलाश प्रजापति सरपंच रामदास मास्टर साहब,तोताराम प्रजापति,सुमेर सिंह प्रजापति,नरेश प्रजापति,पुरुषोत्तमराम प्रजापति, राजेश ठेकेदार, नाथूराम प्रजापति, रामदास फौजी भिण्ड,वेदराम मास्टर डबरा,जमनादास प्रजापति दतिया, रामसेवक प्रजापति दतिया,प्रीतम प्रजापति दतिया, हवलदार सिंह प्रजापति,एडवोकेट प्रकाश टांक हरदा,राजवीर प्रजापति,हरज्ञान प्रजापति शिवपुरी,नरेश प्रजापति, भोलाराम प्रजापति,रविरमण प्रजापति,मयंक प्रजापति,रघुवीर प्रजापति,रामौतार प्रजापति,लक्ष्मण प्रजापति,अरूण प्रजापति,अशोक प्रजापति,श्रीपत प्रजापति सबलग?, महेश प्रजापति जौरा सहित अनेक लोग शामिल हैं।

आगामी त्यौहारों को लेकर थाना मौ में शांति समिति की बैठक हुई संपन्न

पुष्पांजलि टुडे रिपोर्टर मौ डॉ बेताल सिंह गौड़

आज मौ नगर में आगामी त्यौहार नवदुर्गा दशहरा पर्व पर कानून व्यवस्था को लेकर मौ थाने

पर शांति समिति की बैठक आयोजित हुई बैठक में मुख्य रूप से मौ तहसीलदार उदय सिंह जाटव, मौ थाना प्रभारी डॉ संतोष यादव द्वारा उपस्थित सदस्यों से नवरात्रि पर होने वाले आयोजनों में चर्चा हुई की कोई भी व्यक्ति माता रानी की मूर्ति रखने के लिए मैन रास्ते को अवरुद्ध नहीं करेगा माता रानी की प्रतिमा के पास दो लोग रात्रि में रखेंगे 10 बजे के बाद कोई भी डीजे को नहीं बजाएगा और विसर्जन के दिन भी इसका विशेष ध्यान दिया जाए की कोई भी शराब पीकर धारदार हथियार एवं शस्त्र के सात विसर्जन करने नहीं जाएगा अगर कोई भी शासन के नियम निर्देश अनुसार इस त्यौहार को नहीं मनाएगा उसके खिलाफ वैधानिक कार्रवाई की जाएगीमौ कस्बा में 8 से 10 स्थानों पर नवरात्रि पर्व पर मां की झांकियां लगाई जाएगीबैठक में मौ नगर के पत्रकार गण एवं गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे

जनसुनवाई में सुनी 119 आवेदकों की समस्याएं

अधिकारियों को दिये निराकरण करने के निर्देश

खरगोन जिले से मुन्ना खान ब्यूरो चीफ पुष्पांजलि टुडे

प्रत्येक मंगलवार को होने वाली जनसुनवाई की कड़ी में 01 अक्टूबर को कलेक्ट्रेट कार्यालय में जनसुनवाई का आयोजन किया गया। इसमें अपर कलेक्टर श्रीमती रेखा राठौर, संयुक्त कलेक्टर श्रीमती हेमलता सोलंकी एवं डिप्टी कलेक्टर श्रीमती आकांक्षा करोठिया ने आवेदकों की समस्याओं को सुना और संबंधित विभाग के अधिकारियों को उनका त्वरित निराकरण करने के निर्देश दिए। जनसुनवाई में 119 आवेदक अपनी समस्याएं लेकर आए थे। जनसुनवाई में भीकनगांव तहसील के ग्राम उमरिया का निवासी नत्थु प्रधानमंत्री आवास योजना का लाभ दिलाने की मांग लेकर आया था। महेश्वर तहसील के ग्राम बड़दिया का आकाश भूरिया बैटरी चलित ट्राईसिकल की मांग लेकर आया था। आकाश का कहना था कि वह जन्म से ही दोनों पांव से दिव्यांग है। जिसके कारण उसे चलने फिरने में परेशानी होती है। कसरावद तहसील के ग्राम ब?गांव की सक्कु बाई चौबे प्रधानमंत्री आवास योजना का लाभ दिलाने की मांग लेकर आयी थी।बिस्टान निवासी दयाराम पगारे राजस्व रिकार्ड में अपने पिता का नाम संशोधित करने की मांग लेकर आया था। ग्राम अदलपुरा के ग्रामीण शिकायत लेकर आये थे कि उनके गांव के तंवर मोहल्ले के आम रास्ते पर महसुदा पिता मोहम्मद एवं जगदीश द्वारा अतिक्रमण कर पक्का निर्माण कर लिया गया है। जिससे ग्रामीणों को आने जाने में परेशानी होती है। अतः आम रास्ते पर किये गए अतिक्रमण को शीघ्र हटाया जाए।

जांच के बाद बिजली कंपनी के मौ सहायक प्रबंधक को हटाया खबर का असर

पुष्पांजलि टुडे रिपोर्टर मौ डॉ बेताल सिंह गौड़

सहायक प्रबंधक का ऑडियो वायरल मैं लोकेंद्र जाट बोल रहा हूं फीडर की दो सीटी खराब कर दो सब स्टेशन मौ के सहायक प्रबंधक को आखिरकार बिजली कंपनी ने सोमवार को हटा दिया। 12 दिन पूर्व लोकेंद्र राणा का एक ऑडियो वायरल हुआ था। जिसमें वह ट्रांसफार्मर की सीटी खराब कर रसनोल फीडर की

सीटी खराब करने के आदेश अपने अधीनस्थ कर्मचारी को दे रहा था। वायरल ऑडियो को सबसे पहले 18 सितंबर को दैनिक पुष्पांजलि टुडे ने अपने अंक में प्रकाशित किया था। इसके बाद यह मामला कंपनी के वरिष्ठ अधिकारियों के संज्ञान में आया। राजनैतिक पार्टियों के नेताओं ने भी जेई पर कार्रवाई के लिए कलेक्टर के नाम ज्ञापन सौंपे थे।बता दें सहायक प्रबंधक लोकेंद्र राणा को मध्य विद्युत वितरण कंपनी के चीफ मैनेजर ने मौ से हटाकर गोरमी सब स्टेशन पर पदस्थ किया है। जबकि मौ में गोरमी के जेई राहुल तिवारी को भेजा गया है।स्थानांतरण की कार्रवाई के बाद अब जनप्रतिनिधि एफआइआर की मांग कर रहे हैं। आरोप है कि लोकेंद्र राणा ने शासकीय संपत्ति को क्षति पहुंचाई है, इसलिए उनके खिलाफ एफआइआर भी दर्ज की जाए।

जनसुनवाई में मौके पर व्हीलचेयर, वृद्धावस्था पेंशन का स्वीकृत पत्र दिया कलेक्टर ने गोरमी में ली जनसुनवाई

दैनिक पुष्पांजली टुडे

भिण्ड । कलेक्टर संजीव श्रीवास्तव ने आज तहसील स्तरीय जनसुनवाई के अन्तर्गत नगर परिषद कार्यालय गोरमी में जनसुनवाई की। जनसुनवाई के दौरान एसडीएम मेहगांव नवनीत शर्मा, तहसीलदार गोरमी मनीष दुबे, सीएमओ नगर परिष गोरमी सहित विभिन्न विभागो के तहसीलदार स्तरीय अधिकारी उपस्थित थे।कलेक्टर से जनसुनवाई के दौरान रामसिया पुत्र बलवंत सिंह शाक्य वार्ड क्र.3 गोरमी ने वृद्धावस्था पेंशन की मांग की। जिस पर कलेक्टर ने तत्काल मौके पर ही वृद्धावस्था पेंशन स्वीकृत कर स्वीकृति पत्र दिया। इसीप्रकार ग्राम सिरसी निवासी विष्णुदत्त पुत्र जगत सिंह ने दो माह से दिव्यांग पेंशन बंद होने की शिकायत की। जिस पर कलेक्टर ने संबंधित अधिकारी को तत्काल पेंशन चालू कराने के निर्देश दिए साथ ही उन्होंने उनकी दिव्यांगता को देखते हुए अपनी ओर से व्हीलचेयर को उनके घर पहुंचाने के निर्देश जनपद के अधिकारियों को दिए। वार्ड क्र. 3 गोरमी निवासी खुशी पुत्री संतोष ने दिव्यांग पेंशन की मांग की जिस पर उनको दिव्यांग पेंशन देने के निर्देश संबंधित अधिकारी को दिए। साथ ही बीएमओ गोरमी को मौके पर बुलाकर दिव्यांगता प्रमाण पत्र बनाने के निर्देश दिए। जनसुनवाई कार्यक्रम के दौरान कलेक्टर ने गंभीर बीमारी

से संबंधित इलाज, विद्युत बिलों में सुधार, हैण्डपंपों का संधारण, पेंशन, स?क दुघर्टना सहायता, हितग्राही मूलक योजनाओं में बैंक ऋण, बीपीएल राशन कार्ड, सीमांकन, बटवारा, आयुष्मान, जमीन पर कब्जा एवं प्रधानमंत्री आवास स्वीकृत कराने से संबंधित आवेदनों पर कार्रवाई के निर्देश दिए। इसके संबंध में आवेदक को भी कार्यवाही से अवगत कराने के निर्देश भी दिए।

कलेक्ट्रेट में आयोजित शासन की महत्वाकांक्षी योजना जनसुनवाई में अपर कलेक्टर लक्ष्मीकांत पाण्डेय ने आवेदकों की समस्याओं, शिकायतों को सुना और उनका निराकरण किया। कुछ प्रकरणों में संबंधित जिला अधिकारियों को आवश्यक कार्यवाही एवं शीघ्र निराकरण के निर्देश दिए। जनसुनवाई के दौरान 110 से अधिक आवेदन आए जिन पर संबंधितों को भेजकर कार्यवाही के निर्देश दिए। जनसुनवाई में संयुक्त कलेक्टर श्रीमती शिवांगी अग्रवाल सहित अन्य अधिकारी, शहरी एवं ग्रामीणजन उपस्थित थे।

जनसुनवाई के दौरान फरियाद लेकर आने वाले बरुआ नगर लहार रो? भिण्ड के निवासी सफीक खान पुत्र लाल मोहम्मद खान द्वारा दिव्यांगता के कारण दैनिक दिनचर्या के कामों में होने वाली परेशानी के बारे में अवगत कराया गया। जिस पर अपर कलेक्टर ने श्री सफीक खान की परेशानियों को गंभीरतापूर्वक सुनते हुये तत्काल संज्ञान लेकर सामाजिक न्याय एवं निःशक्तजन कल्याण विभाग के उप संचालक दिनेश शाक्य को निर्देशित करते हुए ट्राईसाईकिल उपलब्ध कराई। अपनी समस्या का निराकरण हो जाने पर श्री सफीक खान ने जिला प्रशासन के प्रति आभार जताया।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ओलम्पिक एवं पैरालम्पिक पदक विजेताओं का करेंगे सम्मान

सीहोर के कपिल परमार को मिलेगा एक करोड़ रुपए का चैक

उत्कृष्ट खिलायिों को नियुक्ति-पत्र प्रदाय समारोह 2 अक्टूबर को

रघुवर दयाल गोहिया

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव 2 अक्टूबर को ओलम्पिक एवं पैरालम्पिक खेल-2024 के पदक विजेता खिलाड़ियों का सम्मान करेंगे। सम्मान समारोह दोपहर 12 बजे से तात्या टोपे खेल स्टेडियम के बेडमिंटन हॉल में होगा।खेल एवं युवा कल्याण मंत्री श्री विश्वास कैलाश सारंग ने बताया कि समारोह में वर्ल्ड डेफ शूटिंग चैम्पियनशिप में विजेता और प्रतिभागिता करने वाले खिलाड़ियों का सम्मान भी किया जायेगा। उन्होंने कहा कि समारोह में विक्रम पुरस्कार प्राप्त उत्कृष्ट खिलाड़ियों को शासकीय सेवा में नियुक्ति-पत्र प्रदान किये जायेंगे। टी.टी. नगर स्टेडियम के ऑडियो-विजुअल हाल में सुबह 10-15 बजे से एंटी डोपिंग वर्कशॉप होगी। इसमें नाडा एक्सपर्ट श्री अमित खंडेलवाल और मनोज कुमार अपने विचार व्यक्त करेंगे। इसी प्रकार सुबह 11 बजे से साइबर सिक्योरिटी वर्कशॉप में विशेषज्ञ श्री अंबर पांडे साइबर सिक्योरिटी के संबंध में बतायेंगे।ओलम्पिक पदक हासिल करने वाले हॉकी खिलाड़ी श्री विवेक प्रसाद सागर, पैरालम्पिक पदक प्राप्त जूडो खिलाड़ी श्री कपिल परमार सीहोर और शूटिंग खिलाड़ी सुश्री रूबीना फ्रांसिस को राज्य सरकार की ओर से एक-एक करोड़ रुपये की राशि का चैक भेंट कर सम्मानित किया जायेगा। इसी प्रकार ओलम्पिक प्रतिभागी श्री ऐश्वर्य प्रताप सिंह तोमर, पैरालम्पिक प्रतिभागी सुश्री प्राची यादव और सुश्री पूजा ओझा का 10-10 लाख रुपये की राशि का चैक भेंट कर सम्मान किया जायेगा। विश्व सिक्स रेड स्नूकर चैम्पियनशिप के विश्व विजेता श्री कमल चावला को 3 लाख और डेफ शूटिंग चैम्पियनशिप के विजेता श्री चेतन हेमंत सफल को 2 लाख राशि का चैक भेंट कर सम्मानित किया जायेगा।समारोह में वर्ष 2017 से वर्ष 2022 तक विक्रम पुरस्कार प्राप्त उत्कृष्ट खिलाड़ियों को जल संसाधन, लोक निर्माण, नगरीय विकास, ऊर्जा, चिकित्सा शिक्षा एवं वन विभाग में नियुक्ति-पत्र प्रदान किये जायेंगे। थ्रो-बॉल खिलाड़ी श्री चन्द्रकांत हरडे, वुशू खिलाड़ी सुश्री भूरक्षा दुबे, शूटिंग खिलाड़ी सुश्री प्रगति दुबे, खो-खो खिलाड़ी सुश्री नैन्सी जैन, मलखम्ब खिलाड़ी श्री राजवीर सिंह और जूडो खिलाड़ी सुश्री पूनम शर्मा को जल संसाधन विभाग में नियुक्ति के पत्र दिये जायेंगे। इसी प्रकार पैराकेनो खिलाड़ी सुश्री प्राची यादव और कराते खिलाड़ी सुश्री निधि नन्हेट को लोक निर्माण विभाग में नियुक्ति के प्रमाण-पत्र वितरित किये जायेंगे। सॉफ्ट बॉल खिलाड़ी सुश्री पूजा पारखे, सुश्री रागिनी चौहान तथा योगा के श्री रोहित वाजपेई को नगरीय विकास एवं आवास विभाग का नियुक्ति-पत्र दिया जायेगा।इसी प्रकार सॉफ्ट टेनिस खिलाड़ी श्री जय मीणा और साहसिक खेल के श्री भगवान सिंह कुशवाह को ऊर्जा विभाग में नियुक्ति के प्रमाण-पत्र दिये जायेंगे। कबड्डी खिलाड़ी सुश्री कंचन ज्योति, सॉफ्ट बॉल खिलाड़ी श्री सुबोध चौरसिया और सॉफ्ट टेनिस खिलाड़ी श्री आदित्य दुबे को चिकित्सा शिक्षा विभाग तथा शूटिंग खिलाड़ी सुश्री चिंकी यादव को वन विभाग में नियुक्ति दी जायेगी। इसी प्रकार सुश्री पूजा वस्त्रकार, सुश्री सुदिप्ती हजेला, दिव्यांग श्री धनंजय दुबे, श्री राजू सिंह, सुश्री सोना कीर, श्री विश्वजीत सिंह, श्री हर्षवर्द्धन तोमर, सुश्री आध्या तिवारी को जल संसाधन विभाग, सुश्री राजेश्वरी कुसराम को लोक निर्माण विभाग और श्री रवेश पाण्डे को नगरीय विकास एवं आवास विभाग में नियुक्ति के प्रमाण-पत्र दिये जायेंगे।

आज अखिल भारतीय सर्वदलीय गौरक्षा महाभियान समिति मध्यप्रदेश द्वारा 10 सूत्रीय मांगों को लेकर भोपाल कलेक्टर महोदय को सौपा ज्ञापन।

महेंद्र शर्मा उप संपादक पुष्पांजलि टुडे

भोपाल। अखिल भारतीय सर्वदलीय गौरक्षा महाभियान समिति मध्यप्रदेश के प्रदेशाध्यक्ष गौरव मिश्रा के नेतृत्व मेसौकडो कार्यकर्ताओ के साथ पैदल मार्च निकालकर कलेक्टर के नाम एडीएम को अपनी 10 सूत्रीय मांगों को लेकर अवगत कराते हुए ज्ञापन सौपा।प्रदेश कोषाध्यक्ष श्रीमति शिवांगी ठाकुर ने यह कहा कि नगर निगम वर्तमान मे जो गौ माता के प्रति रवैया अपना रहा है उसे किसी कीमत पर बर्दाश्त नही किया जाएगा।जहा मृत गाय का देह संस्कार किया जा रहा है वहा नगर निगम द्वारा रेडरिग प्लाट बनाया जाना वास्तव मे दुर्गाभाग्य पूर्ण है,इसे हिन्दू समाज कतई बर्दास्त नही करेगा।जहा इंसीनेटर प्लाट है वहा से रेडरिग प्लाट तत्काल अन्य दूसरे स्थान पर विपरीत दिशा मे लगभग 25 किमी दूर विस्थापित किया जाए।पंडित धर्मेन्द्र मिश्रा ने कहा कि सरकार द्वारा केटल फ्री अभियान को तत्काल बंद किया जाए और नगर निगम द्वारा गौशालाओ को दी जानी बाली गौवंश की समीक्षा भी की जाए।वही ओम प्रकाश एंव बाला प्रजापति ने कहा कि जिस प्रकार महाराष्ट्र सर द्वारा महाराष्ट्र मे गाय को राज्यमाता घोषित किया गया उसी तर्ज पर मध्यप्रदेश मे भी गाय को राज्यमाता किया जाए।वही प्रदेशाध्यक्ष गौरव मिश्रा ने चेतावनी देते हुए कहा कि यदि शासन प्रशासन द्वारा इस विषय को गंभीरता पूर्वक लेते हुए तीन दिवश के भीतर कोई कठौर कदम नही उठाया तो अखिल भारतीय सर्वदलीय गौरक्षा महाभियान समिति मध्यप्रदेश जनजागरण करते हुए सडको पर निकलकर एक बड़ा जन आंदोलन खड़ा किया जाएगा जिसकी पूर्ण जिम्मेदारी शासन प्रसाशन की होगी। इस ज्ञापन मे मुख्य रूप से गौ भक्त कृष्णा बुंदेला राकेश नामदेव राकेश प्रजापति हरिओम ठाकुर राज प्रतापसिंह सहित सैकडो गौ भक्त कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

सिचाई विभाग की लापरवाही से किसानों को भारी नुकसान, भ्रष्टाचार के गंभीर आरोप

एक्सईएन ने ईसन नदी पर फर्जी टेंडर दिखा कर 2019 में निकाले 9.33 लाख रुपए

सिंचाई विभाग के अधिकारियों की संपत्ति की होनी चाहिए जॉच - धीरेंद्र सोलंकी

एटा। भारतीय हलधर किसान यूनियन के राष्ट्रीय अध्यक्ष धीरेन्द्र सिंह सोलंकी द्वारा सिंचाई विभाग के सिंचाई खंड एटा के अधिशासी अभियंता तुषार कांति राजन पर भ्रष्टाचार को लेकर गंभीर आरोप लगाए। उन्होंने मगंलवार को एक प्रेस वार्ता का आयोजन किया और सभी सम्मानित पत्रकारों से वार्ता की। वार्ता में बताया कि जिले में अत्यधिक बारिश होने से निधौली कलां कस्बा क्षेत्र में पास ही से होकर गुजर रही अरिंद नदी की सिल्ट की सफाई नहीं होने से नदी के उफान लेने से क्षेत्र में बाढ़ आ गई। बाढ़ का पानी लोगों के घरों में भर गया है। और किसानों की सारी खड़ी फसल जलमग्न हो चुकी हैं किसानों का जीवन जीना दुभर हो गया है। न किसानों के पास खाने का इंतजाम है और न ही पशुओं को खिलाने के लिए ही चारा बचा है। किसान भाइयों का जीवन बद से बदतर हो गया है। इसका मुख्य कारण है अरिंद नदी का सिल्ट सफाई कार्य नहीं कराया जाना। और शासन से प्राप्त हुई शासकीय धनराशि को सिंचाई खंड के अधिशाषी अभियंता तुसार कांति राजन द्वारा बंदरबांट करके एक बड़ा भ्रष्टाचार किया गया है। जबकि सिचाई विभाग में सहायक अभियन्ता के पद नियुक्त भारत भूषण जनपद एटा में करीब आठ वर्ष से इसी पद पर तैनात भी है, और संबद्ध भी हैं। यह नियम के विरुद्ध है। सरकार को इस नियुक्ति पर भी सवाल उठाए। साथ ही विभाग में कई और बड़े स्तर के भ्रष्टाचार हुए हैं, आरटीआई कार्यकर्ता द्वारा आवेदन कर कुछ आवश्यक सूचनाएं मांगी गई। इस पर विभाग द्वारा आरटीआई कार्यकर्ता को जानकारी मिली कि ईसन नदी वर्ष 2019 में तत्कालीन जिलाधिकारी आईपी पांडे के निर्देशन में मानव सृजन कार्य कराए गए जिसमें कई सामाजिक संगठनो के साथ कई अधिकारी और कर्मचारियों सहित कई स्कूल कॉलेज के छात्रों ने प्रतिभाग किया और नदी को स्वच्छ बनाया गया। जिस पर सिंचाई विभाग के तत्कालीन अधिशासी अभियन्ता अजय कुमार भारती ने टेंडर प्रक्रिया अपना कर 9.33 लाख रुपए निकाल लिए गए। ऐसे कई बड़े कार्यों में भ्रष्टाचार किया गया है यदि वर्ष 2017 से अब 2024 तक की गोपनीय जॉच कराई जाए तो कई एक अधिकारियों की गर्दन भ्रष्टाचार में डूबी दिखाई देगी। राष्ट्रीय अध्यक्ष धीरेन्द्र सोलंकी ने कहा कि सोरखा गांव के बाढ़ से पीड़ित किसान जनता अपनी मांगों को लेकर धरना पर बैठे थे। उनकी आवाज प्रशासन के आला अधिकारियों तक न पहुंच पाए इसलिए आवाज दबाने और अपनी नाकामी को छिपाने के लिए अधिशाषी अभियन्ता द्वारा किसानों के खिलाफ एक सुनियोजित घटना कारित करके उनके खिलाफ एफआइआर लिखाई गई है। जिसमें प्रशासन के अधिकारियो को भी कटघरे में खड़ा कर दिया है। यह जांच का विषय है कि थाने की पुलिस फोर्स और तहसील के अधिकारियो के मौजूद होते हुए भी गांव के लोगों ने एक अधिकारी पर हमला कर दिया। यह कैसे संभव हो गया। इस आरोप पर अधिशाषी अभियंता की भी जांच होनी चाहिए। क्योंकि जिस दिन झगड़े की बात कही जा रही है उस दिन तुषार कांति राजन के साथ आखिर सिंचाई विभाग का कार्य करने वाले ठेकेदार क्या कर रहे थे। और सोरखा गांव की निर्दोष किसान जनता के खिलाफ जो एफ आई आर लिखाई गई है, वह कतई सरासर झूठी है।धीरेंद्र सोलंकी ने आगे कहा कि अरिंद नदी की सिल्ट सफाई कार्य की अगर सही रूप से जांच की जाए तो अधिशाषी अभियंता तुषार कांति राजन के साथ साथ कई अधिकारियों की संलिप्तता नजर आएगी। राष्ट्रीय अध्यक्ष ने यह भी आरोप लगाया कि सिंचाई विभाग के कैबिनेट मंत्री स्वतंत्र देव सिंह को कई बार अरिंद नदी की सिल्ट सफाई कार्य नहीं कराए जाने की लिखित शिकायत भी की गई थी। उसके बाद एक देकर जिलाधिकारी एटा को भी बताया गया था लेकिन किसान जनता की आवाज को विभाग द्वारा दबाया गया था। जिसके परिणाम यह हुए कि आज किसान जनता के खेतो में पानी भरा हुआ है। जिसकी सुनवाई तो नहीं की जा रही है किसान जनता पर मारपीट करने का आरोप लगा कर जेल भेजने की तैयारी भी कर दी गई है। भारतीय हलधर किसान यूनियन के राष्ट्रीय अध्यक्ष ने हुंकार भरते हुए कहा कि किसान जनता कि आवाज के लिए अब हलधर यूनियन सामने आ चुकी है। किसानो की आवाज भी हम बनेंगे और सहारा भी हम बनेंगे। इस लड़ाई को लखनऊ तक लड़ा जायेगा। साथ ही प्रत्येक राज्य के पदाधिकारी जनपद में जमा होकर इस सिंचाई विभाग के खिलाफ आंदोलन भी करेंगे और इस भ्रष्टाचार में लिप्त भ्रष्ट सभी अधिकारियो को जेल भेजने का कार्य करेंगे। प्रेस वार्ता के दौरान राष्ट्रीय अध्यक्ष धीरेन्द्र सिंह सोलंकी, राष्ट्रीय प्रवक्ता सुधीर सिंह राधव, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष युवा साजन देव वार्ष्णेय, अलीगढ़ मण्डल महामंत्री रानू ठाकुर, जिलाध्यक्ष अजय वर्मा, जिला उपाध्यक्ष सचिन यादव, जिला मीडिया प्रभारी रवीश कुमार गोला आदि पदाधिकारी उपस्थित थे।

निष्ठापूर्वक किया अनुष्ठान नहीं होता निष्फलः पं कपिल

शताब्दीपुरम दंदरौआधाम मंदिर पर श्रीरामकथा का दूसरा दिन

ग्वालियर। तुलसीदासजी ने अपने स्वयं के सुख के लिए श्रीरामचरित्र मानस लिखी, जिसमें मनुष्य की हर जिज्ञासा का समाधान हैं। यह विचार पं कपिल कृष्ण शास्त्री ने शताब्दीपुरम स्थित दंदरौआ धाम मंदिर पर आयोजित हो रही श्रीराम कथा के दूसरे दिन मंगलवार को व्यक्त किए। इस मौके पर जडैरूआ धाम के संत का पावन सानिध्य रहा। पं कपिल कृष्ण ने रामकथा का सरस वाचन करते हुए बताया कि माता कौशल्या को पता था कि श्रीराम सिर्फ उनके पुत्र नहीं बल्कि साक्षात नारायण हैं, इसलिए उन्होंने भगवान राम की सभी लीलाओं को सहज भाव से प्रभु की इच्छा मानकर स्वीकार किया। उन्होंने कहा कि रामायण के सभी पात्रों का प्रभु चरणों में अलग-अलग प्रेम हैं,लेकिन तत्व एक ही है। कोई वात्सल्य भाव से तो कोई दास भाव से प्रभु का सुमिरन कर रहा है। रामायण समस्त वेद और पुराणों का सार है। उन्होंने कहा कि जीवन में किसी से राग न रखें। सिर्फ ईश्वर में अनुराग रखें तो कल्याण निश्चित है। रामायण की हर चौपाई में रहस्य है।

पं कपिल ने कहा कि जिस तरह बालक की भाषा सिर्फ मां समझ पाती है, उसी तरह संसारी मनष्य नहीं बल्कि गुरू ही आपको समझ सकते हैं। गुरू के बिना पूजा पाठ दान के फल नहीं मिलता। जिस तरह बिना जानकारी के कार्य निष्फल हो जाता है, इसलिए पूर्णफल की प्राप्ति होती है। निष्ठा पूर्वक किया गया अनुष्ठान कभी निष्फल नहीं होता है। उन्होंने बताया कि संतों को तीथराज प्रयाग कहा गया है, जिस तरह सरस्वती नदी सिर्फ उद्गम और संगम पर दिखाई देती है। तीर्थराज प्रयाग के दर्शन से फल अवश्य मिलता है,लेकिन संतों का दर्शन का प्रभाव तुरंत दिखाई देता है। सच्चे संत के दर्शन बहुत ही भाग्य से होते हैं। भक्ति प्रकट और ज्ञान अप्रकट होता है, लेकिन जहां ज्ञान आ जाता है वहां अहंकार उत्पन्न हो जाता है। जिस तरह फूल के सामीप्य से सुगंध फैल जाती है, उसी तरह संतों के सामीप्य से मन भगवान नाम की खुशबू से महक जाता है। उन्होंने कहा कि अपने मुख से कभी संतों की बुराई न करें, यदि उनमें कोई बुराई है तो उसे परमात्मा पर छोड़ दें। इस अवसर पर समिति के अध्यक्ष एसएन शुक्ला, ममता संतोष, मालती-राकेश, रंजना, मंगेश, अर्चना-सुधीर, ज्योति-राममोहन समेत समस्त यजमान परिवार एवं श्रद्धालु श्रोता मौजूद रहे।

राष्ट्रौत्थान न्यास की तीन दिवसीय ज्ञान प्रबोधिनी व्याख्यान माला 4 से -पराग अभ्यंकर, अशोक सेठिया, काजल हिन्दुस्तानी के होंगे व्याख्यान

ग्वालियर। राष्ट्रेत्थान न्यास की तीन दिवसीय ज्ञान प्रबोधिनी व्याख्यान माला 4 से 6 अक्टूबर तक गोविंदपुरी स्थित भारतीय यात्रा एवं प्रबंधन संस्थान (आईआईटीटीएम) में आयोजित की जाएगी।न्यास के अध्यक्ष विजय गुप्ता एवं सचिव श्याम प्रजापति ने बताया कि व्याख्यान माला के पहले दिन 4 अक्टूबर को सायं 5 बजे से सामाजिक समरसता विषय पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अखिल भारतीय सेवा प्रमुख पराग अभ्यंकर का व्याख्यान होगा। 5 अक्टूबर को सायं 5 बजे से वर्तमान युवा विमर्श विषय पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ मध्यभारत प्रांत के प्रांत कार्यवाह अशोक सेठिया का व्याख्यान होगा। 6 अक्टूबर को पुण्य श्लोक देवी अहिल्याबाई होलकर विषय पर श्रीमती काजल हिन्दुस्तानी का व्याख्यान सायं 5 बजे से होगा।उल्लेखनीय है कि राष्ट्रेथान न्यास द्वारा 11 वर्ष से तमसो मा ज्योतिर्गमय अर्थात अंधकार से प्रकाश की ओर के पावन उद्देश्य को लेकर प्रतिवर्ष विभिन्न विषयों पर ज्ञान प्रबोधिनी व्याख्यानमाला आयोजित की जा रही है। इसके अतिरिक्त न्यास द्वारा आरोग्यधाम पैथोलॉजी, छत्रपति शिवाजी स्वास्थ्य परामर्श केंद्र,योग प्रशिक्षण केंद्र सहित अनेक सेवा कार्यों का संचालन किया जा रहा है। श्री गुप्ता एवं श्री प्रजापति ने प्रबुद्धजनों से कार्यक्रम में भाग लेने का आग्रह किया है।

वरिष्ठ नागरिकों की देखभाल व सेवा करना ईश्वर की वंदना के समान - जिला न्यायाधीश

ग्वालियर । वरिष्ठ नागरिकों की देख-भाल व उनकी सेवा करना ईश्वर की वंदना के समान होता है। जो लोग अपने बुजुर्गों की सेवा करते हैं, उनके परिवार की समृद्धि में उत्तरोत्तर बढोत्तरी होती है। बुजुर्गों को वृद्धावस्था में अकेला नहीं छो?ना बच्चों का नैतिक दायित्व है। इस आशय के विचार नालसा (वरिष्ठ नागरिकों के लिये विधिक सेवायें) योजना 2016 के अंतर्गत प्रधान जिला न्यायाधीश एवं अध्यक्ष जिला विधिक सेवा प्राधिकरण ग्वालियर श्री पी सी गुप्ता के निर्देशानुसार वरिष्ठ नागरिक दिवस के अवसर पर माधव वृद्धाश्रम में आयोजित विधिक साक्षरता शिविर में जिला न्यायाधीश एवं सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरण आशीष दवंडे ने व्यक्त किए। इस अवसर पर जिला विधिक सहायता अधिकारी दीपक शर्मा, माधव वृद्धाश्रम के पदाधिकारी पवन भटनागर, नूतन श्रीवास्तव, श्रीमती सीमा सक्सेना सहित वरिष्ठ नागरिक उपस्थित रहे7

क्रिकेट का नया स्टेडियम बन गया अब रूपसिंह स्टेडियम हाकी का हो: सांसद कुशवाह

ग्वालियर। ग्वालियर में भारत बांग्लादेश 20-20 मैच की तैयारियों के चलते लोकसभा सदस्य भारत सिंह कुशवाह ने कै. रूप सिंह स्टेडियम को पुनः हाकी खेल के नाम से आरक्षित करने हेतु मुख्यमंत्री डा. मोहन सिंह यादव से अनुरोध किया है। ग्वालियर के सांसद भारत सिंह कुशवाह ने कहा है कि ग्वालियर में क्रिकेट का नया स्टेडियम बन गया है इसलिये ग्वालियर को हाकी की अंर्तराष्ट्रीय प्रतिभायें देने वाले कै. रूप सिंह स्टेडियम को पुनः हाकी खेल के लिये आरक्षित किया जाये। सांसद कुशवाह ने कहा है कि कै. रूपसिंह ग्वालियर के सपूत थे और उन्होंने ग्वालियर का नाम पूरे विश्व को रोशन किया था। इसी कारण कै. रूप सिंह के नाम पर हाकी स्टेडियम का नाम रखा गया था। सांसद भारत सिंह कुशवाह ने मुख्यमंत्री डा. यादव से स्टेडियम के लिये विशेष निधि से 5 करोड़ रूपये भी स्वीकृत किये जाने की मांग की हैं।

जहाँ पहले कचरे के ढेर लगते थे वहाँ अब सतरंगी रंगोलियाँ सजी हैं

ग्वालियर । जिन स्थानों पर पहले कचरे के ढेर लगे रहते थे, अब उन स्थानों पर कहीं सतरंगी रंगोलियाँ सजीं हैं तो कहीं पौधों की क्यारियाँ व कहीं पर जैविक खाद की संरचनाएँ बन गई हैं। ग्वालियर जिले के ग्रामीण अंचल में ÷स्वच्छता ही सेवा÷ पखवा? के दौरान समाज व सरकार की भागीदारी से यह नवाचार हुआ है। जिले के विभिन्न ग्रामों में 263 कचरे के ठिए सुंदर व साफ-सुथरे स्थानों में तब्दील हो चुके हैं। स्वभाव स्वच्छता-संस्कार स्वच्छता का संदेश लेकर गाँवों में पहुँचे पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग के अधिकारी-कर्मचारियों ने जब गाँव-गाँव में कचरे के ठिए चिन्हित कर उससे होने वाले नुकसान की ओर ध्यान आकर्षित किया तो गाँववासी सहर्ष ही इन कचरों के ठियों को साफ करने में जुट गए। ग्वालियर जिले की जनपद पंचायत मुरार के अंतर्गत 65 ग्राम पंचायतों में स्थित कचरे के ठिए हटाए गए हैं। इसी तरह जनपद पंचायत घाटीगाँव में 48, डबरा में 68 व भितरवार जनपद पंचायत के अंतर्गत 82 ग्राम पंचायतों में कचरे के ठिए हटाकर उन स्थानों को न केवल साफ-सुथरा किया गया है बल्कि जन उपयोगी भी बनाया गया है। इतना ही नहीं जिले के अंतर्गत विभिन्न ग्रामों में ग्रामवासियों की भागीदारी 302 सामूहिक स्वच्छता कार्यक्रम आयोजित किए गए। इन कार्यक्रमों में गाँव के स्कूलों, आंगनबा?ी, सामुदायिक भवन एवं गाँव की गलियों व नालियों की साफ-सफाई शामिल है। जिले सभी विकासखंड मुख्यालयों पर सफाई मित्रों के स्वास्थ्य परीक्षण के लिये विशेष शिविर लगाए गए। साथ ही सफाई मित्रों को सम्मानित भी किया गया।

दंदरौआ धाम मंदिर में कलश यात्रा के साथ भागवत कथा शुरू

ग्वालियर। शताब्दीपुरम स्थित दंदरौआ धाम मंदिर पर सोमवार को कलश यात्रा के साथ श्रीरामकथा का आगाज हुआ। इस मौके पर 121 श्रद्धालु महिलाएं पीले वस्त्र पहन सिर पर कलश लेकर चलीं। दंदरौआ के महामंडलेश्वर रामदास महाराज एवं कथा व्यास पं. कपिल कृष्ण बग्घी पर सवार होकर चले। कथा परीक्षत साधना राजीव कोठारी सिर पर कलश लेकर चल रहे थे।

केयर सोशल एंड मेडिकल सर्विस सामाजिक संस्था द्वारा आयोजित कथा के लिए कलश यात्रा की भव्यता और आकर्षण देख श्रद्धालु भक्त आनंदित हो गए। सीताराम की झांकी को देख भक्त मुग्ध हो उठे। साथ ही बाहुबली हनुमान की सुंदर झांकी ने भक्तों को रोमांचित कर दिया, जिसके लिए विशेष आगरा से कलाकार बुलाए गए थे। राम लखन और सिया हनुमान के रूप में बाल कलाकारों ने सुंदर झांकी का प्रदर्शन किया। इस दौरान महामंडलेश्र रामदास महाराज दंदरौआ धाम से आशीर्वाद लेने के लिए श्रद्धालुओं में होड मची रही। कलश यात्रा सुबह 11 बजे डीडी नगर गेट नम्बर-1 से आरंभ हुई, जो डीडी के नगर के विभिन्न सेक्टरों से होते हुए कथा स्थल शताब्दीपुरम दंदरौआ धाम पहुंची, जहां भव्य कथा पांडाल में श्रीराम कथा का वाचन करते हुए पं कपिल कृष्ण ने कहा कि रामकथा एक ऐसा ग्रंथ है, जिसमें सबकुछ समाहित है। श्रीमद्भागवत हमें मरना सिखाती है और रामकथा जीना सिखाती है।

गौशाला में सीएनजी प्लांट का शुभारम्भ प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के करकमलों से होगा।

ग्वालियर। ॠझ्ञ योजना के अन्तर्गत आदर्श गौशाला ग्वालियर (श्री कृष्णायन देशी गौरक्षा शाला हरिद्वार संचालित) में बायोगैस संयंत्र का लोकार्पण प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के कर कमलों के द्वारा 2 अक्टूबर को आदर्श गौशाला (लाल टिपारा) मुरार ग्वालियर में प्रातः 8.30 बजे करेंगे।जिसमे गरिमामय उपस्थिति प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉक्टर मोहन यादव, केंद्रीय संचार एवं पूर्वोत्तर विकास मंत्री श्रीमंत ज्योतिरादित्य सिंधिया जी, विधानसभा अध्यक्ष श्री नरेन्द्र सिंह तोमर जी, प्रभारी मंत्री तुलसी सिलावट, ऊर्जा मंत्री प्रधूमन सिंह तोमर, केबिनेट मंत्री नारायण कुशवाह, सांसद भारत सिंह कुशवाह सहित गणमान्य लोग उपस्थित रहेंगे।स्वामी ऋषभ देवानंद महाराज ने कहा कि श्री कृष्णायन देशी गौरक्षा शाला हरिद्वार संचालित आदर्श गौशाला (लाल टिपारा) नगर निगम मुरार ग्वालियर में 10000 गौशाला के गोबर से एवं शहर में सब्जी मंडी के वेस्टेज से सीएनजी बनाई जाएगी जिससे गौशाला आत्मनिर्भर बनेगी एवं ग्वालियर प्रदूषण मुक्त करने में ऐतिहासिक पहल होगी7

जिस घर में दिव्यांगजन का सम्मान वहां श्री और समृद्धि का वास होता है : मंत्री कुशवाह

- अंतरराष्ट्रीय वृद्धजन दिवस पर मंत्री ने बांटे दिव्यांगजनों को सहायक उपकरण

ग्वालियर । जिस परिवार में वरिष्ठ जनों का आदर सम्मान होता है और उनके स्वास्थ्य व सुख-दुख की चिंता की जाती है, उस संस्कारवान परिवार में समृद्धि आती है। इसके विपरीत जहाँ वृद्धजन उपेक्षित रहते हैं वहाँ कभी भी वास्तविक तरक्की नहीं हो सकती। इसलिए हम सभी को पूरी संवेदनशीलता के साथ वृद्धजनों का सम्मान और उनकी सेवा करनी चाहिए। यह सभी का नैतिक दायित्व भी है। इस आशय के विचार सामाजिक न्याय एवं दिव्यांगजन कल्याण मंत्री नारायण सिंह कुशवाह ने व्यक्त किए। श्री कुशवाह मंगलवार को अंतराष्ट्रीय वृद्धजन दिवस पर राष्ट्रीय वयोश्री योजना के तहत जिला दिव्यांग पुनर्वास केन्द्र में आयोजित हुए शिविर में वृद्धजनों को सहायक उपकरण वितरित कर रहे थे। इस अवसर पर कलेक्टर श्रीमती रुचिका चौहान, जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी विवेक कुमार एवं विनोद शर्मा सहित अन्य जनप्रतिनिधिगण मंचासीन थे। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के जन्मदिवस से सामाजिक न्याय मंत्री श्री कुशवाह की पहल पर आयोजित हो रहे सेवाभावी कार्यक्रमों की श्रृंखला में ग्वालियर में अंतर्राष्ट्रीय वृद्धजन दिवस पर यह शिविर आयोजित किया गया। सामाजिक न्याय विभाग एवं जिला प्रशासन के सहयोग से आयोजित इस शिविर में 155 वृद्धजनों को एलिम्को से तैयार कराए गए

व्हीलचेयर, वॉकर, कमर का पट्टा, छड़ी व कान की मशीन इत्यादि सहायक उपकरण वितरित किए गए। सामाजिक न्याय मंत्री श्री कुशवाह ने सहायक उपकरण सौंपने के साथ-साथ वृद्धजनों को शॉल-श्रीफल व पुष्पाहारों से सम्मानित किया। मंत्री श्री कुशवाह ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने वृद्धजनों के प्रति पूरी संवेदनशीलता के भाव के साथ वयोश्री योजना बनाई है। साथ ही यह भी कहा वयोश्री योजना के तहत तहसील स्तर भी चिन्हांकन एवं सहायक उपकरण वितरण शिविर आयोजित किए जायेंगे। कलेक्टर श्रीमती रुचिका सिंह चौहान ने इस अवसर पर राष्ट्रीय वयोश्री योजना को और भी बेहतर तरीके से क्रियान्वित करने के लिए वृद्धजनों से अपने अनुभव के आधार पर सुझाव देने का आग्रह किया। उन्होंने वृद्धजनों को भरोसा दिलाया कि आपके सुझावों पर पूरी गंभीरता के साथ अमल किया जायेगा। उन्होंने एलिमको की टीम को उपकरणों के इस्तेमाल के संबंध में वृद्धजनों को प्रशिक्षित करने के निर्देश दिए।

अपर कलेक्टर एवं जिला पंचायत सीईओ विवेक कुमार ने सामाजिक न्याय विभाग की पूरी टीम जिला दिव्यांग पुनर्वास केंद्र की पूरी टीम को साधुवाद देते हुए कहा कि आप सब लोगों ने बेहद कम समय में वरिष्ठ जनों के लिए इतना अच्छा कार्यक्रम आयोजित किया यह एक सराहनीय पहल है।उन्होंने कार्यक्रम में वृद्धजनों के सुझाव भी लिए और उनसे बातचीत भी की।सामाजिक न्याय विभाग की संयुक्त संचालक श्रीमती कीर्ति दीक्षित ने राष्ट्रीय वयोश्री योजना का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। स्वागत गीत शासकीय श्रवण एवं दृष्टि बाधितार्थ विद्यालय के छात्र-छात्राओं लोकेंद्र बघेल, उर्मिला परिहार तथा निशिकांत कौरव ने प्रस्तुत किया कार्यक्रम का संचालन जिला दिव्यांग पुनर्वास केंद्र के प्रशासनिक अधिकारी गिरीश कुमार पाल तथा आभार प्रदर्शन अशोकनगर सामाजिक न्याय विभाग के सहायक संचालक राजेंद्र प्रजापति ने किया। वृद्धजनों के लिये स्वास्थ्य शिविर भी लगा, फिजियोथैरेपी भी की गई

नगर पालिका अध्यक्ष अब्दुल गफ्फार मेमन ने स्वामी आत्मानंद इंग्लिश मीडियम स्कूल में बच्चों को दिलाई स्वच्छता की सफाई

गरियाबंद : स्वच्छता ही सेवा पखवाड़ा के अंतर्गत मंगलवार को नगर पालिका अध्यक्ष अब्दुल गफ्फार मेमन ने स्वामी आत्मानंद इंग्लिश मीडियम स्कूल में करीब 600 छात्राओं एवं शिक्षकों को एक साथ स्वच्छता की शपथ दिलाई। उन्होंने बच्चों को स्वयं स्वच्छता अपनाने के साथ 100 और लोगों को प्रेरित करने, स्वयं गंदगी ना करने, अपने घर मोहल्ले को स्वच्छ रखने, आस पास किसी अन्य को भी गंदगी ना करने देने की शपथ दिलाई। इसके साथ ही हर वर्ष 100 घंटे यानी हर सप्ताह 2 घंटे स्वच्छता के लिए श्रमदान करने का भी संकल्प दिलाया। इस अवसर पर नगर पालिका अध्यक्ष अब्दुल गफ्फार मेमन ने बच्चों को स्वच्छता के महत्व से अवगत कराते हुए कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के जन्मदिवस के अवसर पर समूचे देश में स्वच्छता ही सेवा अभियान के तहत स्वच्छता अभियान चलाया जा रहा है। इस अभियान का उद्देश्य हमारे आसपास के वातावरण स्वच्छ और सुंदर रखना है। उन्होंने कहा कि देश जब स्वच्छ होगा तब विकसित भारत का सपना पूरा होगा। पालिका अध्यक्ष ने आगे कहा कि स्वच्छता हम सब की जिम्मेदारी है और हम सभी की सहभागिता से यह अभियान सफल हो सकता है। उन्होंने बच्चों को भी अपने आसपास के वातावरण को स्वच्छ रखने, अपने घर और आसपास गंदगी न फैलाने की अपील की। मेमन ने कहा घर के सामने कूड़ाकरकट जमा नहीं होने दे, रोजाना घर से निकलने वाले कचड़े को पालिका के वाहन में ही डाले।इस अवसर नगर पालिका उपाध्यक्ष सुरेंद्र सोनटेके, सभापति आसिफ मेमन,, सीएमओ श्रीमती संध्या वर्मा, इंजी अश्वनी वर्मा, प्राचार्य बुद्ध सहित बड़ी संख्या में स्कूली बच्चे और शिक्षकगण उपस्थित थे।

करुणाधाम में 9 दिन बरसेगी बड़ी अम्मा की करुणा

भोपाल = नवरात्रि के शुभ अवसर पर करुणाधाम आश्रम में मां उग्र काली की 21 फीट ऊंची पंचमुखी प्रतिमा की स्थापना की जा रही है। उल्लेखनीय है कि आश्रम के युवाओं ने माता रानी को ÷बड़ी अम्मा÷ कहकर संबोधित किया है। बुधवार 2 अक्टूबर को रात 8 बजे बड़ी धूमधाम से बड़ी अम्मा को आश्रम में लाया जाएगा। बड़ी अम्मा का आगमन करुणाधाम के सभी 500 से 600 युवा काला कुर्ता और त्रिपुण लगाकर एवं बारात लेकर प्लेटिनम प्लाजा और नेहरू नगर चौराहे से होते हुए करुणाधाम आश्रम में प्रवेश करेंगे।

आश्रम प्रमुख पीठाधीश्वर श्री सुदेश जी शांडिल्य महाराज, उनकी धर्मपत्नी श्रीमां ममता शांडिल्य एवं सभी श्रद्धालु विधिवत रूप से स्थापना करेंगे। बता दे कि इस वर्ष आश्रम को माता रानी के वस्त्रों के रंग के समान आश्रम में लाइट लगाई गई है। हर दिन अलग लाइट जलेगी, जो काफी दर्शनीय होगी। करुणाधाम युवा समिति अध्यक्ष श्री शाश्वत शांडिल्य ने बताया कि ईशावस्यम में विराजी माता रानी की पोशाक को स्वयं श्रीमां ममता शांडिल्य ने बनाया है। इसका कपड़ा दुबई, बहरीन जैसे प्रख्यात स्थानों से लाया गया है। इसी उपलक्ष्य पर, माता रानी को 9 दिन अलग अलग विशेष प्रकार के भोग और वस्त्र धारण कराएंगे जाएंगे।

साथ ही नाम और गौत्रो के साथ 10 दिन के लिए 251 दीप प्रज्वलित होंगे। इसका भक्तगण अष्टमी को दर्शन का लाभ ले सकते है। उल्लेखनीय है कि यह पट नवरात्रि की अष्टमी में ही खोले जाते है। आमजनों और भक्तगण के लिए आश्रम में मेला भी लगाया जाएगा। इसमें मनोरंजक झूले, खाने के स्टॉल एवं फलहारी आइटम्स और सेल्फी प्वाइंट रहेंगे।

सभी विधायक अपनी-अपनी विधानसभा का विजन डाक्यूमेंट बनाएं : मुख्यमंत्री

भोपाल। विकासशील योजनाओं और सकारात्मक चर्चाओं को भाजपा सरकार हमेशा, दलगत राजनीति से ऊपर रखकर प्रदेश के हितों को प्राथमिकता देगी। सभी विधायक वो चाहे कांग्रेस के हो, या बीजेपी के सभी अपनी-अपनी विधानसभा कां विजन डाक्यूमेंट बनाएं। पांच सालों मे वह विकास के मामले में अपनी विधानसभा को कहां ले जाना चाहते हैं और उसमें हम समान रूप से सारे विधायकों की मदद करेंगे। यह बात मुख्यमंत्री डा. मोहन यादव ने कही है।मुख्यमंत्री डा. मोहन यादव ने हाल ही में कांग्रेस के विधायकों के साथ एक बैठक की थी। बैठक के बाद, मुख्यमंत्री ने सभी कांग्रेस विधायकों को उनकी विधानसभा में विकास कार्यों के लिये भरोसा दिया था। मुख्यमंत्री का कहना था कि सभी विधायक अपनी अपनी विधानसभाओं में विजन डाक्यूमेंट बनाएं। पांच सालों मे वह विकास के मामले में अपनी विधानसभा को कहां ले जाना चाहते हैं और उसमें हम समान रूप से सारे विधायकों की मदद करेंगे। हम मध्यप्रदेश की आर्थिक व्यवस्था भी डबल करने वाले हैं। उन्होंने कहा कि पहले हमने अपनी फसलों के सर्वे का फैसला किया है। जिसके लिए हमने जिला कलेक्टरों को निर्देशित किया है कि अगर फसल खराब हुई है तो उसका निराकरण करें। इसके साथ ही गौशालाओं के लिए उनकी व्यवस्था अच्छी बनी रहे, उसका अनुदान ब?ाने के लिए नगरीय क्षेत्र में इन्दौर, उज्जैन, भोपाल, ग्वालियर ब?ी-ब?ी नगर निगमों में गौशाला बनाने और गौ धन को ब?ावा देने के साथ ही दूध पर बोनस और दूध उत्पादन में भी मध्यप्रदेश देश का नम्बर राज्य बने। मुख्यमंत्री डा. यादव ने कहा कि विकास के मामले में मध्यप्रदेश देश का नम्बर वन राज्य बने इस प्रयास में हम लगे है। मध्यप्रदेश को एक नए रूप में भी लाना है।

स्वामी, प्रकाशन, मुद्रक एवं संपादक भरत सिंह चौहान द्वारा वॉइस ऑफ मध्यांचल मीडिया नेटवर्क प्राइवेट लिमिटेड 101 वैष्णोपुरम एबी रोड बिरलानगर ग्वालियर म.प्र. 474004 से मुद्रीत करा कर दीपू इलेक्ट्रॉनिक हनुमान मंदिर के पास भिण्ड रोड गोले का मंदिर जिला ग्वालियर मध्यप्रदेश 474005 से प्रकाशित। भरत सिंह चौहान पी. आर. बी. एक्ट के तहत समाचार चयन के लिए जिम्मेदार। E-mail : Pushpanjalitoday@gmail.com 0751-4050784, Mob.:8269307478